बाबा अमरनाथ बर्फानी जी की पूजा पद्धति

डॉ. चन्द्रमौलि रैणा

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान ट्रस्ट (पञ्जीकृत)

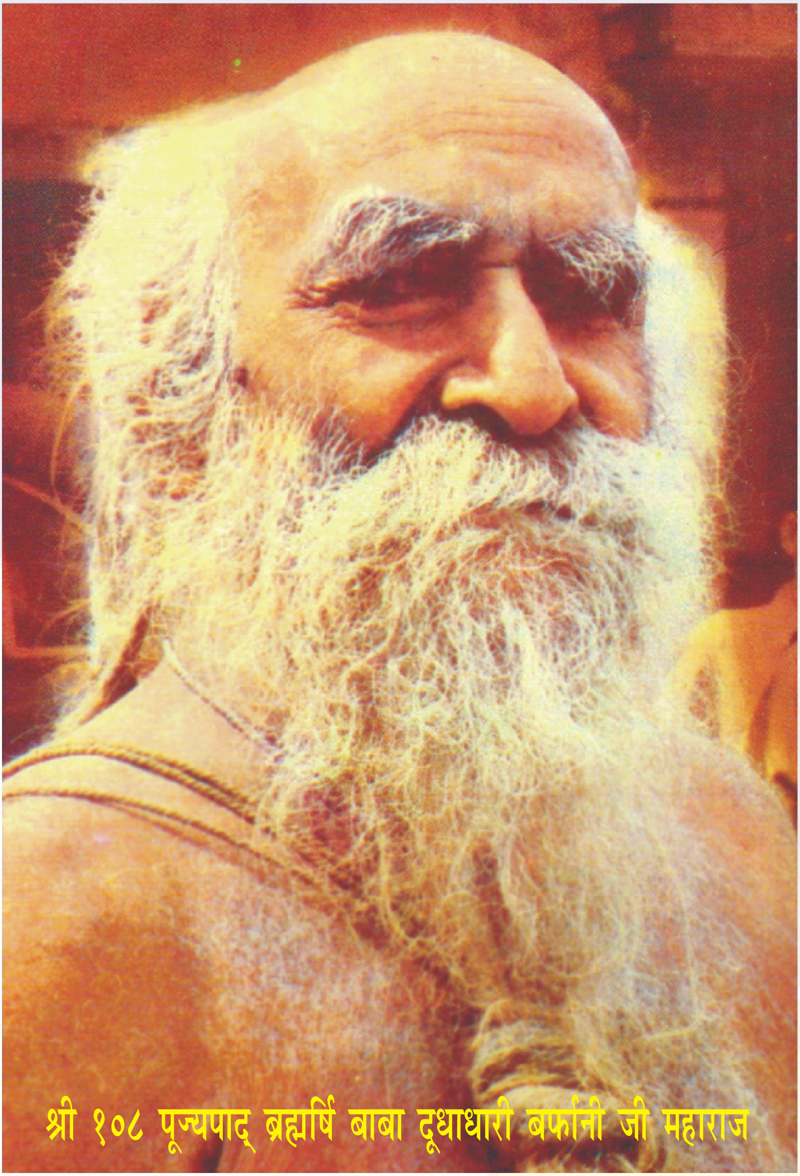

श्री १०८ पूज्यपाद् ब्रह्मर्षि बाबा दूधाधारी बर्फानी जी महाराज

“ब्रह्मर्षि बाबादूधाधारी महात्मनां प्रशस्तिः।।”

श्री १०८ श्री ब्रह्मर्षिदूधाधारी प्रशस्तिः

दुग्धाधारी यतिवर प्रभुर्वैष्णवानन्दकारी
वेदोद्धारी प्रतिपदमहो विश्वतो यज्ञकारी।
सिद्धाचारी स शणवसनो बाल्यतो ब्रह्मचारी
ब्रह्मनन्दं जनयति हृदि स्मर्तुरुद्धारकारी।।१।।

नाम्नां धाम्नामुपधविरहेणाऽऽत्मसिद्धौ प्रसिद्धाः
पुण्यात्मानो द्विजसुरगवां सर्वदेवावधानाः।
यज्ञैरिष्ट्बा जनगणमनोहारि पर्जन्यहेते।
धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातं दधानाः।।२।।

दुग्धाधारिमहात्मनां द्विजकुले जातं शतं जन्मना-
मित्थं मे प्रतिभाति सन्मुखधिया यज्ञव्रताभ्यासतः।
नानातीर्थनिषेवणाद्गुरुकृपामासाद्यगोपालनाद्
देवानां सततार्चनात्षडक्षरजपादष्टाङ्गयोगार्जनात्।।३।।

वेदानां श्रवणाज्जगद्गुरुमुखान्मौनव्रतालम्बनात्
सच्छास्त्राचरणात्पुराण श्रवणात्पित्रर्चनान्नित्यशः।
गायत्र्याविधिवज्जपन्द्विजमुखान्नित्यं पुरश्चर्यया
श्रीतस्मार्तमखैः सदेह जगतः कल्याण सञ्चिन्तनात्।।४।।

ब्रह्मषिप्रवरा जगद्गुरुवरा दृष्ट्वैक दृष्टया जगत्
हस्त्राक्षं जितवन्त इत्थमपि ते जाताः सहस्त्राध्वराः।
नानातीर्थवनादिषु हिमजलाशय्यास्तपश्चर्यया
कृत्वाऽऽत्मानमतीव निर्मलमहो जगतां हिताय स्वयम्।।५।।

उड्राङ्गासमवङ्ग मागधरवसाऽऽसाकेत काशी गया
जम्बू श्रीनगर सदूधमपुराम्बाराम आर्यश्रियम्।
राजौरी ह्यखनूर मानससरो जन्द्राह भड्डूगुढा
गङ्गायामुनसङ्गमं हरिहरद्वारोज्जयिन्याह्वयम्।।६।।

क्षेत्रं नैमिषिकं समेत्य वदरीक्षेत्रं कुरूणां वरम्
गामं गामहो सदर्षिप्रवराश्चान्त्ये स्मरन्तः प्रभुम्
न्यास्थज्छ्री प्रभुदास वैष्णव कृते सत्कार्यभारं महत्
भारश्री वहताँ सतां प्रभुवरा जीवन्तु कल्पावधिम्।।७।।

इति विहारिलाल वाशिष्ठ प्रणीता
श्री १०८ श्रीब्रह्मर्षिदुग्धा धारिमहात्मनां
।। प्रशस्तिः समाप्ता ।।

गुरु वन्दना

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिए।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिए।

मुझ में है जप तप न साधन और नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है।।
हे मेरे गुरुदेव ......

खा रहा/रही गोते हूँ मैं भवसिन्धु के मझदार में।
आसरा है दूसरा कोई नहीं संसार में।।
हे मेरे गुरुदेव ......

पाप बोझे से लदी नैय्या भँवर में जा रही है।
सद्गुरु आओ अब बचाओ नैय्या डूबी जा रही।।
हे मेरे गुरुदेव ......

आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा/जाऊँगी मैं।
भवसागर की नाव कैसे पार कर पाऊँगा/पाऊँगी मैं।।
हे मेरे गुरुदेव ......

हर जगह मंजिल भटक कर अब शरण ली आपकी।
पार करना या न करना दोनों मर्जी आपकी।।
हे मेरे गुरुदेव ......

पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः॥

परम् पूज्य
माता जी श्रीमती शान्ति देवी तथा
पिता जी पं॰ रामेश्वर दत्त रैणा (राजज्योतिषी)
आप दोनों के चरणों में भावपुष्प समर्पित हैं।

वन्दनीय-अनुकरणीय जीवन के सच्चे प्रतीक को हमारा श्रद्धापूर्वक नमन

श्रीगोकुलधाम निवासी
डॉ॰ बिहारि लाल वसिष्ठ जी

"यशः शरीरं न विनश्यति"

मनुष्य का भौतिक शरीर न रहने पर भी उसकी यश-कीर्ति रूपी देह बनी रहती है। आपके ऊँचे और सच्चे आदर्श आज भी हमारा जीवन पथ आलोकित कर रहे हैं। आपका कर्मशील जीवन वन्दनीय है।

हम उन्हीं आदर्शों का अनुकरण करते हुए श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान ट्रस्ट (पञ्जीकृत) के सभी सदस्यगण आपको श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।। ॐ।।

उप राज्यपाल
जम्मू व कश्मीर

सन्देश

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि डॉ० चन्द्रमौलि रैणा, प्रोफेसर ज्योतिष (सेवानिवृत्त) केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय भूतपूर्व सदस्य, श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड, सदस्य श्री शिवखोड़ी धाम श्राईन बोर्ड ने अपने बहुमूल्य योगदान से पुस्तक 'श्री बाबा अमरनाथ बर्फानी जी की पूजा पद्धति' संकलित तथा सम्पादित की है। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक श्री अमरनाथ जी पवित्र गुफा पर पूजा करने वाले पुजारियों के लिए तथा स्वयं शिव पूजा करने वाले भक्तों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। डॉ. चन्द्रमौलि रैणा जी के लिए मंगलकामनाओं सहित।

मनोज सिन्हा
उप राज्यपाल
जम्मू व कश्मीर

बाबा अमरनाथ बर्फानी जी
की
पूजा पद्धति

संकलन तथा सम्पादन

डॉ. चन्द्रमौलि रैणा

आचार्य ज्योतिष (सेवानिवृत्त)

केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय

श्रीरणबीरपरिसर

कोट-भलवाल, जम्मू

श्री राघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान ट्रस्ट (पञ्जीकृत)

44/2 त्रिकुटा नगर, जम्मू - 180020

प्रकाशक:
श्री राघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान ट्रस्ट (पञ्जीकृत)
44/2 त्रिकुटा नगर, जम्मू - 180020
जम्मू व कश्मीर

संस्करण 2024

मुद्रक:
हरे कृष्णा कम्पोज़िंग एण्ड प्रिंटिंग हाऊस
जम्मू

www.drcmraina.com

निवेदन

वेदः शिवः शिवो वेदः – वेद शिव हैं और शिव वेद हैं अर्थात् शिव वेद स्वरूप है। यह भी कहा गया है कि वेद नारायण का साक्षात् स्वरूप है– **"वेदो नारायणः साक्षात् स्वयम्भूरिति शुश्रुम"**– इसके साथ वेद को परमात्म प्रभु का निःश्वास कहा गया है। अतः भारतीय संस्कृति में वेद की अनुपम महिमा है। जैसे ईश्वर अनादि–अपौरूषेय हैं उसी प्रकार वेद भी सनातन जगत् में अनादि अपौरूषेय माने जाते हैं। इसीलिए वेद मन्त्रों द्वारा शिव का पूजन, अभिषेक, यज्ञ और जप इत्यादि किया जाता है।

श्रुति कहती है– "सृष्टि के पूर्व न सत् (कारण) था, न असत् (कार्य); केवल एक निर्विकार शिव ही विद्यमान थे।" अतः "जो वस्तु सृष्टि के पूर्व हो, वही जगत् का कारण है और जो जगत् का कारण है, वही ब्रह्म है।" इससे यह बात सिद्ध होती है कि 'ब्रह्म' का ही नाम 'शिव' है। ये शिव नित्य और अजन्मा हैं, इनका आदि और अन्त न होने से ये अनादि और अनन्त हैं। ये सभी पवित्र करने वाले पदार्थों को भी पवित्र करने वाले हैं। इस प्रकार भगवान् शिव सर्वोपरि परात्पर तत्त्व हैं। अर्थात् जिनसे परे और कुछ भी नहीं है– **"यस्मात् परं नापरमस्ति किञ्चित्।"**

भगवान् शंकर के चरित्र बड़े ही उदात्त एवं अनुकम्पा पूर्ण हैं। ये ज्ञान, वैराग्य तथा साधुता के परम आदर्श हैं। चन्द्र–सूर्य इनके नेत्र हैं, स्वर्ग सिर है, आकाश नाभि है, दिशाएँ कान हैं। इनके समान न कोई दाता है, न तपस्वी है, न ज्ञानी है, न त्यागी है, न वक्ता है, न उपदेष्टा और न कोई ऐश्वर्यशाली ही है। ये सदा सब वस्तुओं से परिपूर्ण हैं।

www.drcmraina.com

भगवान् शिव के विविध नाम हैं। उनके अनेक रूपों में उमामहेश्वर, अर्धनारीश्वर, हरिहर, मृत्युंजय, पंचवक्त्र, एकवक्त्र, पशुपति, कृत्तिवास, दक्षिणामूर्ति, योगीश्वर तथा नटराज आदि रूप बहुत प्रसिद्ध हैं। भगवान् शिव का एक विशिष्ट रूप लिंग रूप भी है, जिनमें ज्योतिर्लिङ्ग, स्वयम्भूर्लिङ्ग, नर्मदेश्वरर्लिङ्ग हिमलिङ्ग, स्फटिक लिङ्ग और अन्य रत्नादि तथा धात्वादि लिङ्ग एवं पार्थिव आदि लिङ्ग हैं। इन सभी रूपों की स्तुति-उपासना तथा कीर्तन भक्तजन बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं।

भूतभावन भगवान् सदाशिव की महिमा का गान कौन कर सकता है? किसी मनुष्य में इतनी शक्ति नहीं, जो भगवान् शंकर के गुणों का वर्णन कर सके। परम तत्त्वज्ञ भीष्मपितामह से नीति, धर्म और मोक्ष के सूक्ष्म रहस्यों का विवेचन सुनते हुए महाराज युधिष्ठिर ने जब शिव महिमा के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो वृद्ध पितामह ने अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा–

"साक्षात् विष्णु के अवतार भगवान् श्रीकृष्ण के अतिरिक्त मनुष्य में सामर्थ्य नहीं कि वह भगवान् सदाशिव की महिमा का वर्णन कर सके।"

भीष्म पितामह के प्रार्थना करने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने भी यही कहा–

"हिरण्यगर्भ, इन्द्र और महर्षि आदि भी शिवतत्त्व जानने में असमर्थ हैं, मैं उनके कुछ गुणों का ही व्याख्यान करता हूँ"– ऐसी स्थिति में हम-जैसे तुच्छ जीवों के लिये तो भगवान् शिव की महिमा का वर्णन करना एक अनाधिकार चेष्टा ही कही जायेगी, किंतु इसका समाधान श्रीपुष्पदन्ताचार्य ने अपने शिवमहिम्नः-स्तोत्र के आरम्भ में ही कर दिया है–

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥

www.drcmraina.com

यदि आपकी महिमा को पूर्ण रूप से बिना जाने स्तुति करना अनुचित हो तो ब्रह्मादि की वाणी रुक जायेगी और कोई भी स्तुति नहीं कर सकेगा; क्योंकि आपकी महिमा का अन्त कोई जान ही नहीं सकता। अनन्त का अन्त कैसे जाना जाय? तब अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार जो जितना समझ पाया है, उसे उतना कह देने का अधिकार दूषित नहीं ठहराया जाय तो मुझ-जैसा तुच्छ जीव भी स्तुति के लिये कमर क्यों न कसे? कुछ तो हम भी जानते ही हैं, जितना जानते हैं, उतना क्यों न कहें! आकाश अनन्त है, सृष्टि में कोई भी पक्षी ऐसा नहीं जो आकाश का अन्त पा ले, किंतु इसके लिये वे उड़ना नहीं छोड़ते, प्रत्युत जिसके पंखों में जितनी शक्ति है, उतनी उड़ान वह आकाश में भरता है। हंस अपनी शक्ति के अनुसार उड़ता है और कौआ अपनी शक्ति के अनुसार। यदि वे नहीं उड़ें तो उनका पक्षी-जीवन ही निरर्थक हो जाय। इसी प्रकार अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार अनन्त शिवतत्त्व को जितना समझ सके, उतना समझते हुए और उसका मनन करते हुए परमात्म-प्रभु सदाशिव की महिमा और उनके गुणों का गान किये बिना शिवभक्त रह नहीं सकते।"

अतः यहाँ यह प्रयास किया गया है कि भगवान् शंकर की वैदिक मन्त्रों द्वारा पूजा विधि, स्तुति, आरती और उनसे सम्बन्धित स्तोत्रों को एक स्थान पर संगृहीत कर लिया जाय, जिससे भक्तजनों को पठन-पाठन, कीर्तन और मनन करने में सुविधा हो। आशा है, भक्तजन इससे लाभान्वित होंगे।

'श्री बाबा अमरनाथ जी की पूजा पद्धति' का सम्पादन करने के लिए मैंने जिन पुस्तकों से सहायता ली है उनके यशस्वी लेखकों का आभार प्रदर्शित करना मेरा कर्त्तव्य है। गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित वृहद्-स्तोत्ररत्नावली, शिव स्तोत्र रत्नावली, नित्यकर्म-पूजा प्रकाश आचार्य मुकुन्दबल्लभ जी. द्वारा विरचित 'कर्मठगुरू', श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्' में संकलित लेखसूत्र इस पुस्तक को लिखने में सहायक रहे।

www.drcmraina.com

श्री अमरनाथ जी श्राइन बोर्ड के अध्यक्ष माननीय उप राज्यपाल महोदय श्री मनोज सिन्हा जी तथा निजी सचिव डॉ. मनदीप के. भण्डारी, अडीशनल सी.इ.ओ. श्री राहुल सिंह जी तथा बोर्ड के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनकी प्रेरणा से यह पुस्तक लिखी गई।

पुस्तक सम्पादन में सहायक श्री सुमित शास्त्री, श्री राकेश दूबे शास्त्री, श्री शिव कुमार शास्त्री, श्री प्रमोद शास्त्री, श्री दीपक शास्त्री (माता वैष्णो देवी), श्री विनय शास्त्री, श्री पुरुषोत्तम शास्त्री। इन सभी प्रिय शिष्यों को शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए भगवान सदाशिव से इनके अभ्युदय के लिए प्रार्थना करता हूँ। श्री राजेन्द्र सौगुणिया जी को भी आशीर्वाद एवं साधुवाद देता हूँ। जिन्होंने कम्प्यूटर द्वारा टंकण कार्य करके पुस्तक की सज्जा में वृद्धि की तथा यथा समय पुस्तक प्रकाशित करवा दी।

पुस्तक में प्रायशः सभी जिज्ञासाओं को शान्त करने का प्रयास किया है फिर भी कोई अनवधानता हुई हो तो सम्पादक को सूचित करने की कृपा करें ताकि अगले प्रकाशन में ध्यान रखा जा सके। इस पुस्तक के सम्पादन में यहाँ कहाँ से जो सहायता प्राप्त की है वे सभी बर्फानी बाबा श्री अमरनाथ जी से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

चन्द्रमौलि रैणा

www.drcmraina.com

विषयानुक्रमणिका

1.	बावा बर्फानी अमरनाथ जी का पूजन	1
2.	आत्मपूजा	3
3.	स्वस्तिवाचनम्	9
4.	श्री गौरीगणेशपूजा	12
5.	श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्	19
6.	षोडशमातृका पूजन	21
7.	विप्र वरणम्	24
8.	ईशान कलश स्थापनम्	24
9.	पाञ्च गणों का पूजन	28
10.	शिवपूजनम्	33
11.	महाभिषेकस्नानम्	37
12.	शिव नीराजनम्	54
13.	विसर्जनम्	59
14.	श्रीसूर्यार्घ्यदानम्	61
15.	श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	62
16.	अथवेदसार स्तोत्रम्	63
17.	शिव स्तुति	65
18.	आरती	66
19.	शिवमानसपूजा	68
20.	वेदसारशिवस्तवः	69

www.drcmraina.com

21.	शिवताण्डवस्तोत्रम्	71
22.	श्रीविश्वनाथाष्टकम्	74
23.	लिङ्गाष्टकम्	76
24.	बाबा अमरनाथ जी की आरती	77
25.	नटराज स्तुति	79
26.	शिव स्तुति	80
27.	ॐ जय जगदीश हरे	81
28.	श्री शिवमहिम्नस्तोत्रम्– अंग्रेजी अनुवाद सहित	82
29.	श्रीशिवरामाष्टकस्तोत्रम्	107
30.	पवन मन्द सुगन्ध शीतल	108
31.	मधुराष्टकम्	110
32.	मङ्गलगीतम्	111
33.	श्रीभगवतीस्तोत्रम्	112
34.	भवान्यष्टकम्	113
35.	गौरीशाष्टकम्	115
36.	जयशंभुनाथ, दिगंबरम्	116
37.	शिवभक्त– 'भृंगी'	117
38.	श्रीशिवकृत श्रीराम–स्तुति	123
39.	विनियोग	125
40	आरती श्री गंगा जी की	130

www.drcmraina.com

बाबा बर्फानी अमरनाथ जी का पूजन

अथ शांतिपाठः

ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः।
देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभिनो निवर्तताम्।
देवानाꣳसख्यमुपसे दिमावयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥
तान्पूर्वया निविदाहूमहे वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विनासरस्वतीनः सुभगामयस्करत्॥
तन्नोवातोमयोभुव्वा तु भेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम्॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषानो यथावेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥
स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसोविश्वे नोदेवाऽअवसागमन्निह॥
भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपितास पुत्रः।
विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्॥
तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः।
नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः॥
आयुष्यंवर्च्चस्यꣳरायस्पोषमौद्भिदम्।
इदꣳहिरण्यव्वर्च्चस्वज्जैत्राय विशतादुमाम्॥

www.drcmraina.com

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे-देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि।

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।

शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः॥

॥ॐ सुशान्तिर्भवतु॥

॥ सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ श्री-मातृ-पितृ-चरण-कमलेभ्यो नमः। ॐ पञ्चोंकारेभ्यो नमः। ॐ षोडशमातृका-सप्तमातृकाभ्यो नमः। ॐ कुण्डमण्डपाधिष्ठातृ-देव-ताभ्यो नमः। ॐ अधिदेव-प्रत्यधिदेव-सहितेभ्यो सूर्यादिग्रहेभ्यो-नमः। ॐ समस्त-लोकपालेभ्यो नमः। ॐ वास्तु-क्षेत्रपालयोगिनी-सर्वतोभद्र-पीठाधिष्ठातृ-देवताभ्यो नमः। ॐ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः। ॐ श्रीराधादामोदराभ्यां नमः। ॐ बद्रीनाथादिचतुर्धामभ्यो नमः। ॐ गंगादिसप्तविंशतिनदीभ्यो नमः। ॐ प्रयागादि-तीर्थ-राजेभ्यो नमः। ॐ त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवायरुद्राय नमः। ॐ पुण्यं पुण्याहंदीर्घमायुरस्तु।

www.drcmraina.com

आत्मपूजा

पवित्रीधारणम् :

ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

अथवा

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

आत्माभिषेक :

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आचमनम् :

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः।

हस्तप्रक्षालनम्ः

ॐ श्रीकृष्णपरमात्मने नमः। ॐ गोविन्दाय नमः।
ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।

प्राणायाम :

ॐ भूभुर्वः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अङ्गन्यास :

ओं वाङ्मेऽआस्येऽस्तु। ॐ नासोर्मे प्राणोऽस्तु। ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। ॐ ऊर्वोर्मेऽओजोऽस्तु। ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तन्वा सह सन्तु।

www.drcmraina.com

सषपैर्दिग्बन्ध :

रक्षोहणंव्वलगहनंव्वैष्णवी मिदमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेनिष्ट्योय ममात्योनिचखानेदमहन्तंव्वलगमुत्किरा मियम्मेसमानोयमसमानोनिच-खानेदमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेसबन्धुर्य्यमसबन्धुर्न्निचखानेद महन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेसजातोयमसजातोनिचखानोत्कृत्याङ्किरामि॥

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः।
ये चात्र विघ्नकर्त्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभे॥

ओं प्राच्यैः नमः, ॐ अवाच्यै नमः, ॐ प्रतीच्यै नमः
ओं उदीच्यै नमः, ॐ अन्तरिक्षाय नमः, ॐ पूजाभूम्यै नमः

विनियोग :

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः।

पृथ्वीपूजा :

ॐ पृथिव्यैः (आधारशक्तये) पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घ्यं, मुखे आचमनीयम्, शरीरे स्नानीयं, वस्त्रोपवस्त्रं, यज्ञोपवीतं एष गन्धः इमे अक्षताः इमानि पुष्पाणि, धूपोदीपश्च नैवेद्यं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।

पृथ्वी प्रार्थना :

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

कर्मपात्रस्थापनम् :

गन्धादिना त्रिकोणमण्डलं कृत्वा दूर्वागन्धाक्षतपुष्पाणि निधाय कर्मपात्रं न्यसेत्। तत्रकर्मपात्रं पूर्ववद् गन्धाद्यैः सम्पूज्य।

कलशस्थापनम् :

ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीः पुनर्म्मा विशतादुयिः॥

www.drcmraina.com

जलपूरणम् :

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थोवरुणस्यऽऋत सदन्यसि

वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥

तीर्थाभिमन्त्रणम् :

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

गन्धक्षेप:

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

दूर्वा

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

पूंगीफलम्

ॐ याः फलिनीर्याऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥

पंचरत्नम्

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानिदाशुषे॥

सुवर्णखण्ड:

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

रक्तवस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो॥

स्मार्ताचमनम् :

ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः।

www.drcmraina.com

वरुणावाहनम्

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः॥
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुणं आवाहयामि।
(कलश को चारों दिशाओं में तिलक लगायें)
ॐ ऋग्वेदाय नमः, ॐ यजुर्वेदाय नमः
ॐ सामवेदाय नमः, ॐ अथर्ववेदाय नमः

देवताह्वानम्

ॐ कला कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः।
संगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते॥
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः।
मूले तस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती॥
कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥
नद्याश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशे स्थिताः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

आत्मतिलकम् :

ॐ सुचक्षाऽअहमक्षीभ्यां
भूयासꣳसुवर्चामुखेन।
सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम्॥

www.drcmraina.com

शिखाबन्धनम् :

ॐ उर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये चामुण्डे चापराजिते।।

सूर्यार्घ्यम् :

ॐ एहि सूर्यसहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

ध्यानम् :

ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्त्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृत शंखचक्रः।।

दीपार्घ्यम् :

ॐ सुप्रकाश महादीप सर्वतस्तिमिरापह।
प्रसीद मम गोविन्द दीपार्घ्यं प्रतिगृह्यताम्।।

दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।
सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।।

दीपप्रार्थना :

ॐ दीप! ब्रह्मरूपस्त्वमन्धकारनिवारक।
इमा मया कृता पूजा गृह्ण तेजो विवर्धय।।

धूपार्घ्यम् :

ॐ वनस्पति रसोद्भूत गन्धाढ्य सुमनोहरम्।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपार्घ्यः प्रतिगृह्यताम्।।

www.drcmraina.com

धूपम्

ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वतितन्धूर्वयंवयंधूर्वामः।
देवानामसिवह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्॥

धूपप्रार्थना :

ॐ वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तुते॥
एषाऽऽत्मपूजा सर्वकर्मसुप्रयोज्या॥

प्रतिज्ञा संकल्प :

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया-प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदे मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा- यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (अमुक वर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्) सपत्नीकः ममाऽत्मनः श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिकामः कायिकवाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपातकदुरितक्षयद्वारा चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रदेवताप्रीत्यर्थं शिवलिङ्गोपरि (अमुकलिङ्गोपरि) दुग्धधारया जलधारया वा पूजनमहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन नन्दीश्वरादीनां नन्दीश्वरवीरभद्रस्वामिकार्तिक-कुबेर-कीर्तिमुखादीनां पूजनं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये।

www.drcmraina.com

अथ स्वस्तिवाचनम्

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्। विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवोदेवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव। इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभारामहेमतीः यथाशमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्नना-तुरम्॥ एतंते देवसवितुर्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव॥ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो-त्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥ एष वै प्रतिष्ठानाम् यज्ञोयत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते न सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति॥ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपतिꣳहवामहे

www.drcmraina.com

निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसोमम आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्। नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्योव्रातपतिब्भ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योविश्वरूपेब्भ्यश्च वो नमो नमः।।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनंध्यायेत्सर्व - विघ्नोपशान्तये।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये - त्र्यम्बके - गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेङ्ऽघ्रियुगं स्मरामि।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

www.drcmraina.com

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।
वक्रतुण्ड - महाकाय - कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।

www.drcmraina.com

श्री गौरीगणेशपूजा

श्रीगणपतिध्यानम्–

श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्।
दोर्भिः पाशाङ्कुशाब्जाभयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं,
ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिमलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्॥

श्रीगौरीध्यानम्–

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥

आह्वानम्– **ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहे**
प्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहे
निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसोमम।
आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकाँ काम्पीलवासिनीम्॥

आसनम्– **ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः।**
इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति॥

पाद्यम्– **ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।**
पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

अर्घ्यम्– **ॐ धामन्ते विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि।**
अपामनीके समिथेयऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्तऽऊर्मिम्॥

www.drcmraina.com

आचमनम्– **ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥**

स्नानम्– **ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत: सम्भृतं पृषदाज्यम्।**

पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये॥

पय:स्नानम्–**ॐ पय: पृथिव्यांम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधा:**

पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम्॥

शुद्धस्नानम्– **ॐ देवस्यत्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्।**

एवं सर्वत्र दधिघृतादि स्नानान्ते इति प्रयोज्यम्।

दधिस्नानम्– **ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिन:।**

सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत्॥

घृतस्नानम्– **ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितोघृतम्वस्य धाम।**

अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभव्वक्षिहव्यम्॥

मधुस्नानम्–**मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव:। माध्वीर्न:**

सन्त्वोषधी:।

मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरज:। मधुद्यौरस्तुन: पिता।

मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँऽऽअस्तुसूर्य:। माध्वीर्गावोभवन्तुन:॥

शर्करास्नानम्–**ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्येसन्तꣳसमाहितम्। अपाꣳ**

रसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रा- यत्वा

जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

उद्वर्तनस्नानम्– **ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वाव्वसु: परिदधातु**

व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडित:।

इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै

यजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडित:। मित्रो–वरुणौ

त्वोत्तरत: परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै

यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडित:॥

www.drcmraina.com

शुद्धस्नानम्— **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽ-अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।**

श्रीगणेश अम्बिका मूर्तियों को स्वच्छ वस्त्र से साफ करें। साफ करते हुए निम्न स्तोत्र का पाठ करें।

श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्रम्—

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये॥१॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥२॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्॥५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्॥६॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः॥८॥

www.drcmraina.com

वस्त्रम्– **ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सउश्रेयान् भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः॥**

यज्ञोपवीतम्– **ॐ यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तु तेजः॥**

चन्दनम्– **ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥**

अक्षतान्– **अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्वभानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी।**

पुष्पाणि– **ॐ ओषधीःप्रतिमोद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥**

दुर्वाङ्कुरम्– **ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥**

सिन्दूर– **ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रिमयः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥**

सुगन्धतैलम्– **ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वाव्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसम्परिपातु व्विश्वतः॥**

धूपम्– **ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वतितन्धूर्वयम्वयंधूर्वामः। देवानामसिवह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्॥**

दीपम्– **ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा॥**

www.drcmraina.com

नैवेद्यम्– **ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।**
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

हस्तप्रक्षालनम्– **ॐ अꣳशुना तेऽअꣳशुःपृच्यतां परुषा परुः।**
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः॥

फलम्– **ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।**
बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्व-ꣳ-हसः॥

ताम्बूलम्– **ॐ उतस्मास्यद्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः।**
श्येनस्येवद्व्रजतोऽअङ्कसम्परिदधिक्राब्णः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा।

दक्षिणा– **ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।**
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाव्विधेम्॥
ज्वालामालिन्यैनमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि इत्यादिगन्धादिना आररार्तिकं सम्पूज्य वामहस्ते घण्टावादयन्॥

आरार्त्तिकम्– **ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः।**
दिवः सदाꣳसि वृहती वितिष्ठ सऽआत्वेषं वर्तते तमः॥
इदꣳहविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये।
आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥

पुष्पाञ्जलि– **ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।**
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान्कामकामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु

www.drcmraina.com

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुषऽआन्तादापरार्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुत-विश्वतस्यात्। सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

प्रदक्षिणा— ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥

विशेषार्घ्यः— ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद॥
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहितमहागणाधिपतये नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

www.drcmraina.com

प्रार्थना

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथनमोनमस्ते।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।

ॐ लक्ष्मीं तनोति नितरामितरानपेक्ष
मङ्घ्रिद्वयं निगम शाखि शिखा प्रवालम्।
हेरम्बमम्बरूहडम्वर चौर्य निघ्नम्।
विघ्नाद्रि भेद शतधार धुरन्धरं नः।
नमस्तेब्रह्मरूपायविष्णुरूपाय ते नमः।
नस्मस्ते रूद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।
विश्वरूपस्वरूपायनमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियायदेवायनमस्तुभ्यं विनायक।।
लम्बोदरनमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषुसर्वदा।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति।।
विद्या प्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भवनित्यमेव।

अनयापूजया सिद्धिबुद्धिसहितोमहागणपतिः सांगः सपरिवारः प्रीयताम्।।

नवग्रह ध्यानम्

सूर्य हरें तम कष्ट करें कम, चन्द्र बड़े मुद मंगलकारी।
बुद्धि पवित्र करे बुध नित्य, बढ़ावत ज्ञान गुरु सुखकारी।।
शुचि जीवन शुक्र सदैव करे, शनि शोक हरें रवि दृष्टि निहारी।
राहु रहें गति, केतु करें मति, दिव्य नवग्रह सोइत भारी।।

www.drcmraina.com

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः

हरिः ॐ॥ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतोमांपाहिपाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्॥१॥ तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। "ॐ गं गणपतये नमः।" एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥ एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभय वरदं हस्तैर्बिभ्राणं

www.drcmraina.com

मूषकध्वजम्।। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानु-लिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।। एतदथर्वशीर्षं योऽधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथवर्णवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलम- वाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा संनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद।। ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः।।

।। इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ।।

www.drcmraina.com

षोडशमातृका पूजन

आवाहन एवं स्थापन–

१. ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाह्यामि, स्थापयामि।
ॐ गौर्यै नमः, गौरीमावाह्यामि, स्थापयामि।

२. ॐ पद्मायै नमः, पद्मामावाह्यामि, स्थापयामि।

३. ॐ शच्यै नमः, शचीमावाह्यामि, स्थापयामि।

४. ॐ मेधायै नमः, मेधामावाह्यामि, स्थापयामि।

५. ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाह्यामि, स्थापयामि।

६. ॐ विजयायै नमः, विजयामावाह्यामि, स्थापयामि।

७. ॐ जयायै नमः, जयामावाह्यामि, स्थापयामि।

८. ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाह्यामि, स्थापयामि।

९. ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाह्यामि, स्थापयामि।

१०. ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाह्यामि, स्थापयामि।

११. ॐ मातृभ्यो नमः, मातृः आवाह्यामि, स्थापयामि।

१२. ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृः आवाह्यामि, स्थापयामि।

१३. ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाह्यामि, स्थापयामि।

१४. ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाह्यामि, स्थापयामि।

१५. ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाह्यामि, स्थापयामि।

१६. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाह्यामि, स्थापयामि।

हाथ जोड़कर नमस्कार करें :–

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

www.drcmraina.com

षोडश मातृका ध्यानम्

गणनाथ के साथ ऊमा पद्मा, शचि मेधा कृपा करि दीजे सहारा।
सावित्री विजया और जया, देवसेना स्वधा करुणामयि धारा।।
स्वाहा स्वधा लोकमाता धृति, शुचि पुष्टि व तुष्टि हरौ महि भारा।
आत्मनः कुलेदवता है षोडश, पूर्ण करो शुभ काम हमारा।।

कुलदेव पूजनम्—

ॐ कुलानां शुभदः शान्तः सर्वदा कुलवर्द्धनः।
आयुर्बलं यशो देहि कुलदेव नमोऽस्तुते।।

गुरुध्यानम्—

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवेनमः।।

सप्तमातृका प्रार्थना—

ललिता च उमा गौरी अम्बिका सलिलाश्रया।
भगाही च भगाक्षी च सप्तैता घृतमातृका:।।

पञ्च ॐकार पूजनम्—

ॐकारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।।

श्रीपूजनम्—

ॐश्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रेपाश्र्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।

www.drcmraina.com

ब्रह्मपूजनम्—

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुच्चो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

विष्णुपूजनम्—

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥

शिवपूजनम्—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

प्रार्थना—

ब्रह्मा देवो च गायत्री तथा गोवर्धनेश्वरः।
पृथ्वी यज्ञपतिश्चैतान् पञ्चोङ्कारान्नमाम्यहम्॥

www.drcmraina.com

अथ विप्र वरणम्

अथ संकल्पः

ॐ तत्सदद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे-जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्त्तैकदेशे अमुकस्थाने अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुकगोत्रः अमुकशर्मा श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्तिकामः चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं अमुक शिवलिङ्गपूजनं ब्राह्मण द्वारा कारयितुमेभिवरणद्रव्यैर्यथानामगोत्रान् ब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।

अथ ईशान कलश स्थापनम्

भूमिस्पर्शः – **ॐ महीद्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्।**
पिपृतानो भरीमभिः॥

तण्डुलपुञ्जम् – **ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।**
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥

कलशस्थापनम् – **ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।**
पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा
पयस्वतीः पुनर्म्माविशताद्रयिः॥

जलपूरणम्– **ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी**
स्थोवरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि
वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥

www.drcmraina.com

तीर्थजलम्– **इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोम ँ स च तापरुष्ण्या।**

असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणु ह्यासुषोमया॥

गन्धक्षेप: – **ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पति:।**

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

सर्वौषधी: – **ॐ याऽओषधी: पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।**

मनैनु बभ्रुणामहँशतंधामानि सप्त च॥

दूर्वा – **ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुष: परुषस्परि।**

एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

पञ्चपल्लवा: – **ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्ण्णे वो वसतिष्कृता।**

गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम्॥

सप्तमृत्तिका – **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।**

यच्छान: शर्म्म सपृथा:॥

पूंगीफलम् – **ॐ या: फलिनीर्याऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणी:।**

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वँहस:॥

पंचरत्नम्– **ॐ परिवाजपति: कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानिदाशुषे॥**

सुवर्णखण्डम्–**ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।**

सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

रक्तवस्त्रम् – **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरुथमासदत्स्व:।**

वासोऽअग्ने विश्वरूपँसंव्ययस्व विभावसो॥

पूर्णपात्रम् – **ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।**

वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज ँ शतक्रतो॥

श्रीफलम् – **ॐ या: फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणी:।**

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वँहस:॥

www.drcmraina.com

वरुणावाहनम्—

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः॥
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं
सशक्तिकं वरुणं आवाह्यामि।

देवताह्वानम्— ॐ कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः।
संगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते॥
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः।
मूले तस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती॥
कावेरी कृष्णा वेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥
नद्याश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशे स्थिताः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

प्रतिष्ठा— ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञꣳसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।
कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु॥

www.drcmraina.com

कलशस्थदेवपूजा – **ॐ कलशे आवाहितवरुणादि देवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यम् हस्तयोरर्घ्यं मुखे आचमनीयम्। सर्वांगेषु स्नानीयम्। गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य-दक्षिणादि यथासम्भवोपचाराणि समर्पयामि।**

प्रार्थना – **ॐ देवदानव-संवादे मथ्यमाने महोदधौ**
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयिस्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्च प्रजापतिः।
आदित्या वसवोरुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः॥
त्वत्प्रसाददिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।
अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्।
ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥

वरुण देव ध्यानम्

वास करहिं मुख में लक्ष्मीपति, कण्ठ में वास करें त्रिपुरारी।
मूल में ब्रह्मा निवास करें, मध्य में माताएं मंगलकारी॥
सागर द्वीप नदी वसुधा, सब तीरथ वेद भी है शुभकारी।
हे वरुण देव विराजो यहाँ, दुःख दूर करो विनती है हमारी॥

www.drcmraina.com

पाञ्च गणों का पूजन

नन्दीश्वरपूजनम्

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।

प्रार्थना

ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा।
वृषाग्निं वृषणं भरन्नपां गर्भꣳसमुद्रियम्।
अग्न - आ - याहि - वीतते।।

वीरभद्रपूजनम्

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

प्रार्थना

ॐ भद्रो नोंऽअग्निराहुतमो भद्रा रातिः सुभग
भद्रोऽअध्वरः भद्रा उत प्रशस्तयः।।

स्वामिकार्तिकपूजनम्

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

प्रार्थना

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।

www.drcmraina.com

कुबेरपूजनम्

ॐ कुविदङ्गयवमन्तो यवंचिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥

प्रार्थना

ॐ वयᳬसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

कीर्तिमुखपूजनम्

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सᳬसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ओजश्च मे सहश्च मे आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूᳬषि च मे शरीराणि च मेआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

सर्पमन्त्रः

नमोऽस्तुसर्प्पेब्भयोयेकेचपृथिवी मनु॥
येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्योनमः॥

अथात्मविन्यासः (अपने अङ्गों का स्पर्श करें)

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा-पापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥ शिखायाम्।
ॐ अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषाᳬसहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ शिरसि।

www.drcmraina.com

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
तेषाᳬंसहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।। ललाटे।
ॐ वयᳬंसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि।। भ्रुवोर्मध्ये।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। नेत्रयोः।
ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योति-र्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा। तृतीयनेत्रे।
ॐ नमः स्त्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च।। कर्णयोः।
ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।
नासिकयोः।
ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वᳬंसहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। मुखे।
ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघाᳬंसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः।। ग्रीवायाम्।
ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवᳬंरुद्रा उपश्रिताः।
तेषाᳬंसहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।। कण्ठदेशे।
ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।। बाह्वोः।
ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाᳬंसहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।। हस्तयोः।

www.drcmraina.com

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुद्ध्न्याय च॥ अङ्गुलिषु।

ॐ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाꣳ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्त्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमऽआनिर्हतेभ्यः। हृदये।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥ पृष्ठे।

ॐ विकिरिद्रविलोहित नमस्ते अस्तु भगवः।
यास्ते सहस्रꣳहेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः। उदरे।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्करराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ दक्षिणकुक्षौ।

ॐ द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित।
आसां प्रजानामेषां पशूनां माभेर्मा रोङ्मोचनः किं च नाममत्॥ वामकुक्षौ।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥ नाभौ।

ॐ मीढुष्टम शिवतमशिवो नः सुमना भव।
परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसानऽआ चर पिनाकम्बिभ्रदा गहि। कट्याम्।

ॐ शिवो नामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा माहिꣳसीः।
निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय। लिङ्गे (हस्तप्रक्षालनम्)।

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ गुह्ये।

ॐ इषे त्त्वोर्जे त्त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय

www.drcmraina.com

कर्म्मण आप्यायद्ध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मामावस्तेनईशतमाघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥ वृषणयोः (हस्तप्रक्षलनम्)।

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ ऊर्वोः।

ॐ एष ते रुद्र भागः सहस्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः॥ जान्वोः।

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापर जाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च॥ जंघयोः।

ॐ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च॥ गुल्फयोः।

ॐ ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः।
तेषाꣳसहस्त्र योजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ पादयोः।

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्।
अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव। कवचम्।

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥ अस्त्रम्।

ॐ विज्ज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः। धनुः।

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्मयच्छतु॥ बाणः।

ॐ विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः।
यास्ते सहस्त्र हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तुताः॥ खड्गः।

ॐ य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे।
तेषाꣳसहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ दिग्बन्धनम्।

'शिवोऽहम्' इति भावयेत्।

www.drcmraina.com

अथ शिवपूजनम्

ध्यानम्– **ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,**

रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।

पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,

विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः साम्बशिवं ध्यायामि।

आवाहनम् – **ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।**

बाहुभ्यामुत ते नमः।।

त्रिपुरान्तकरं देवं चूडाचन्द्रं महाद्युतिम्।

गजचर्मपरीधानं शिवमावाहयाम्यहम्।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आवाहनं समर्पयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्– **ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी।**

तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।

विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर।

मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आसनं समर्पयामि। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्– **ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।**

शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत्।।

www.drcmraina.com

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् – ॐ शिवेन वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठंसुमना असत्।।
नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचनम्– ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातु धान्यो धराचीः परासुव।।
सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर।।
श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्– ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चेनर्ठंरुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशो वैषार्ठंहेडईमहे।।
गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्– ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

www.dromraina.com

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि। पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम् – **ॐ दधिक्राब्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः।**
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत्॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि॥ दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम् – **ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम।**
अनुष्वधमावह मादयस्वस्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम् – **ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्त्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तुनः पिता॥ मधु-मान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः। माद्ध्वीर्गावो भवन्तु नः॥**
दिव्यै पुष्पैः समुद्भुतं सर्वगुणसमन्वितम्।
मधुरं मधुनामाद्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि।
मधुस्नानान्ते शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

www.drcmraina.com

शर्करास्नानम्– **ॐ अपाँ॑ रसमुद्वयस॑ सूर्ये सन्त॑ समाहितम्।**

आ॑ रसस्य यो रसस्तंबोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो

सीन्द्रायत्त्वाजुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।

मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्– **ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।**

सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेभवत्सरित्।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयोदधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम् – **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः।**

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा

षामाऽअवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गङ्गा गोदवरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।

सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

www.drcmraina.com

महाभिषेकस्नानम्

नमस्तेरुद्र मन्यवउतोतऽइषवेनमः॥
बाहुभ्यामुतते नमः॥१॥

दु:ख दूर करने वाले (अथवा ज्ञान प्रदान करने वाले) हे **रुद्र! आपके** क्रोध के लिये नमस्कार है, आपके बाणों के लिये नमस्कार है और आपकी दोनों भुजाओं के लिये नमस्कार है।।1।।

याते रुद्रशिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी॥
तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभि चाकशीहि॥२॥

कैलास पर रहकर संसार का कल्याण करने वाले (अथवा वाणी में स्थित होकर लोगों को सुख देने वाले या मेघ में स्थित होकर वृष्टि के द्वारा लोगों को सुख देने वाले) हे रुद्र! आपका जो मङ्गलदायक, सौम्य, केवल पुण्यप्रकाशक शरीर है, उस अनन्त सुखकारक शरीर से हमारी ओर देखिये अर्थात् हमारी रक्षा कीजिये।।2।।

यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे॥
शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीः पुरुषञ्जगत्॥३॥

कैलास पर रहकर संसार का कल्याण करने वाले तथा मेघों में स्थित होकर वृष्टि के द्वारा जगत् की रक्षा करने वाले हे सर्वज्ञ रुद्र! शत्रुओं का नाश करने के लिये जिस बाण को आप अपने हाथ में धारण करते हैं वह कल्याणकारक हो और आप मेरे पुत्र-पौत्र तथा गो, अश्व आदि का नाश मत कीजिये।।3।।

www.drcmraina.com

शिवेनवचसात्वागिरिशाच्छाव्वदामसि॥
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽअसत्॥४॥

हे कैलास पर शयन करने वाले! आपको प्राप्त करने के लिये हम मङ्गलमय वचन से आपकी स्तुति करते हैं। हमारे समस्त पुत्र-पौत्र तथा पशु आदि जैसे भी नीरोग तथा निर्मल मन वाले हों, वैसा आप करें॥4॥

अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्रथमो दैव्योभिषक्॥
अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव॥५॥

अत्यधिक वन्दनशील, समस्त देवताओं में मुख्य, देवगणों के हितकारी तथा रोगों का नाश करने वाले रुद्र मुझसे सबसे अधिक बोलें, जिससे मैं सर्वश्रेष्ठ हो जाऊँ। हे रुद्र! समस्त सर्प, व्याघ्र आदि हिंसकों का नाश करते हुए आप अधोगमन कराने वाली राक्षसियों को हमसे दूर कर दें॥5॥

असौ यस्ताम्रोऽअरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः॥
ये चैनꣳरुद्द्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोवैषाꣳहेडईमहे॥६॥

उदय के समय ताम्रवर्ण (अत्यन्त रक्त), अस्तकाल में अरुणवर्ण (रक्त), अन्य समय में वभ्रु (पिंगल)– वर्ण तथा शुभ मंगलों वाला जो यह सूर्यरूप है, वह रुद्र ही है। किरणरूप में ये जो हजारों रुद्र इन आदित्य के सभी ओर स्थित हैं, इनके क्रोध का हम अपनी भक्तिमय उपासना से निवारण करते हैं॥6॥

असौयोवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः॥
उतैनंगोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्यः स दृष्ट्टोमृडयाति नः॥७॥

जिन्हें अज्ञानी गोप तथा जल भरने वाली दासियाँ भी प्रत्यक्ष देख सकती हैं, विष धारण करने से जिनका कण्ठ नीलवर्ण का हो गया है, तथापि विशेषतः रक्तवर्ण होकर जो सर्वदा उदय और अस्त को प्राप्त होकर गमन करते हैं, वे रविमण्डल-स्थित रुद्र हमें सुखी कर दें॥7॥

www.drcmraina.com

नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।।
अथो येअस्य सत्वानोऽहंतेभ्योऽकरन्नमः।।८।।

नीलकण्ठ, सहस्त्रनेत्र वाले, इन्द्रस्वरूप और वृष्टि करने वाले रुद्र के लिये मेरा नमस्कार है। उस रुद्र के जो भृत्य हैं, उनके लिये भी मैं नमस्कार करता हूँ।।8।।

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।।
याश्च्चतेहस्तइषवः पराताभगवोव्वप।।९।।

हे भगवान्! आप धनुष की दोनों कोटियों के मध्य स्थित प्रत्यञ्चा का त्याग कर दें और अपने हाथ में स्थित बाणों को भी दूर फेंक दें।।9।।

विज्यन्धनुः कपर्द्दिनोविशल्योबाणवाँ २उत।।
अनेशन्नस्य याऽइषवआभुरस्य- निषङ्गधिः।।१०।।

जटाजूट धारण करने वाले रुद्र का धनुष प्रत्यञ्चारहित रहे, तूणीर में स्थित बाणों के नोंकदार अग्रभाग नष्ट हो जाएँ, इन रुद्र के जो बाण हैं, वे भी नष्ट हो जायँ तथा इनके खड्ग रखने का कोश भी खड्गरहित हो जाय अर्थात् वे रुद्र हमारे प्रति सर्वथा शस्त्ररहित हो जायँ।।10।।

या ते हेतिर्मीढुष्ट्टमहस्ते बभूव ते धनुः।।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।११।।

अत्यधिक वृष्टि करने वाले हे रुद्र! आपके हाथ में जो धनुष रूप आयुध है, उस सुदृढ़ तथा अनुपद्रवकारी धनुष से हमारी सब ओर से रक्षा कीजिये।।11।।

www.drcmraina.com

परिते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।।
अथो यऽइषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहितम्।।१२।।

हे रुद्र! आपका धनुषरूप आयुध सब ओर से हमारा त्याग करे अर्थात् हमें न मारे और आपका जो बाणों से भरा तरकश है, उसे हमसे दूर रखिये।।12।।

अवतत्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे।।
निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमनाभव।।२३।।

सौ तूणीर और सहस्त्र नेत्र धारण करने वाले हे रुद्र! धनुष की प्रत्यञ्चा दूर करके और बाणों के अग्र भागों को तोड़कर आप हमारे प्रति शान्त और शुद्ध मन वाले हो जायँ।।13।।

नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे।।
उभाभ्भ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्त व धन्वने।।१४।।

हे रुद्र! शत्रुओं को मारने में प्रगल्भ और धनुष पर न चढ़ाये गये आपके बाण के लिये हमारा प्रणाम है। आपकी दोनों बाहुओं और धनुष के लिये भी हमारा प्रणाम है।।14।।

मानो महान्तमुत मानोअर्भकम्मा न उक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्।।
मानोवधीः पितरन्मोतमातरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः।।१५।।

हे रुद्र! हमारे गुरु, पितृव्य आदि वृद्धजनों को मत मारिये, हमारे बालक की हिंसा मत कीजिये, हमारे तरुण को मत मारिये, हमारे गर्भस्थ शिशु का नाश मत कीजिये, हमारे माता-पिता को मत मारिये तथा हमारे प्रिय पुत्र-पौत्र आदि की हिंसा मत कीजिये।।15।।

www.drcmraina.com

मानस्तोके तनये मानआयुषि मानोगोषुमानोअश्वेषुरीरिषः।।
मानोवीरान्रूद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।।

हे रुद्र! हमारे पुत्र–पौत्र आदि का विनाश मत कीजिये, हमारी आयु को नष्ट मत कीजिये, हमारी गौओं को मत मारिये, हमारे घोड़ों का नाश मत कीजिये, हमारे क्रोधयुक्त वीरों की हिंसा मत कीजिये। हविसे युक्त होकर हम सब सदा आपका आवाहन करते हैं।।16।।

गन्धोदकस्नानम्– **ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।**
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।
मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

विज्जयास्नानम्– **ॐ विज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ २ उत।**
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।
शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम्।
विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम्।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विजयां समर्पयामि विजयासमर्पणान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम् – **ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।**
उतैनं गोपा अदृ श्श्रन्नदृ श्श्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।

www.drcmraina.com

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्– ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथ मा सदत्स्वः।

वासो अग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो।

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्– ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसमितः सुरूचोव्वेनऽआवः

सुबुध्न्या उपमाऽअस्य व्विष्टा। सतश्च योनिमसतश्चव्विवः॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धः – ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम्।

याश्च ते हस्त इषवः पराता भगवोव्वप॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि।

भस्म – ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।

सꣳसृज्यमातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः॥

सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम्।

www.drcmraina.com

सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः भस्मं समर्पयामि।

अक्षत् – **ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।**

अस्तोषतस्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिता।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला– **ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।**

अश्वा इव सजित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि – **ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥१॥ गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर। सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय॥२॥ त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर॥३॥ श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदा प्रियम्। पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर॥४॥ त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च कोमलैश्चातिसुन्दरैः। त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव**

www.drcmraina.com

सर्वदा॥५॥ अमृतोद्भवश्रीवृक्षं शङ्करस्य सदा प्रियम्। तत्ते शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर॥६॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुर– **ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।**

एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, एकादश दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि – **(अबीर-गुलाल-बुक्का-हरिद्रा-चूर्णानि) –**

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुँ ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳसं परिपातु विश्वतः॥

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।

नानापरिमल द्रव्यं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम्– **ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।**

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।

शुभदं चैव माङ्गल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम् – **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।**

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥

www.drcmraina.com

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर॥
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

अंग पूजा

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि॥१॥ ॐ शङ्कराय नमः जंघे पूजयामि॥२॥ ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि॥३॥ ॐ शम्भवे नमः कटिं पूजयामि॥४॥ ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि॥५॥ ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि॥६॥ ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि॥७॥ ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वेंपूजयामि॥८॥ ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि॥९॥ ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि॥१०॥ ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि॥११॥ ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि॥१२॥ ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि॥१३॥ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि॥१४॥

आवरण पूजा

ॐ अघोराय नमः॥१॥ ॐ पशुपतये नमः॥२॥ ॐ शिवाय नमः॥३॥ ॐ विरूपाय नमः॥४॥ ॐ विश्वरूपाय नमः॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः॥६॥ ॐ भैरवाय नमः॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः॥९॥ ॐ ईशानाय नमः॥१०॥ ॐ महेशाय नमः॥१२॥

शक्तिपूजा

ॐ उमायै नमः॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः॥२॥ ॐ पार्वत्यै नमः॥३॥ ॐ गौर्यै नमः॥४॥ ॐ काल्यै नमः॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः॥६॥ ॐ कोटर्यै नमः॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः॥८॥ ॐ ह्रां नमः॥९॥ ॐ ह्रीं नमः॥१०॥ ॐ गङ्गादेव्यै नमः॥११॥

www.drcmraina.com

गणपूजनम्

ॐ गणपतये नमः॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः॥२॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः॥४॥ ॐ भैरवाय नमः॥५। ॐ शूलपाणये नमः॥६॥ ॐ ईश्वराय नमः॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः॥८॥ ॐ नन्दिने नमः॥९॥ ॐ महाकालाय नमः॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजनम्

ॐ भवाय क्षितिमूर्तये नमः॥१॥ ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः॥२॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः॥३॥ ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः॥४॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः॥५॥ ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः॥६। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः॥७॥ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः॥८॥

एकादश रुद्रपूजनम्

ॐ अघोराय नमः॥१॥ ॐ पशुपतये नमः॥२॥ ॐ शर्वाय नमः॥३॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः॥४॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः॥६॥ ॐ कपर्दिने नमः॥७॥ ॐ भैरवाय नमः॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः॥९॥ ॐ ईशानाय नमः॥१०॥ ॐ महेश्वराय नमः॥११॥

अष्टोत्तरशतशिवनाम-पूजनम्

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवताः गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः।

ॐ शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं,
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

www.drcmraina.com

१ ॐ शिवाय नमः
२ ॐ महेश्वराय नमः
३ ॐ शम्भवे नमः
४ ॐ पिनाकिने नमः
५ ॐ शशिशेखराय नमः
६ ॐ वामदेवाय नमः
७ ॐ विरूपाक्षाय नमः
८ ॐ कपर्दिने नमः
९ ॐ नीललोहिताय नमः
१० ॐ शंकराय नमः
११ ॐ शूलपाणये नमः
१२ ॐ खट्वाङ्गिने नमः
१३ ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
१४ ॐ शिपिविष्टाय नमः
१५ ॐ अम्बिकानाथाय नमः
१६ ॐ श्रीकण्ठाय नमः
१७ ॐ भक्तवत्सलाय नमः
१८ ॐ भवाय नमः
१९ ॐ शर्वाय नमः
२० ॐ त्रिलोकीशाय नमः
२१ ॐ शितिकण्ठाय नमः
२२ ॐ शिवप्रियाय नमः
२३ ॐ उग्राय नमः
२४ ॐ कपालिने नमः
२५ ॐ कामरये नमः

www.drcmraina.com

२६ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः
२७ ॐ गंगाधराय नमः
२८ ॐ ललाटाक्षाय नमः
२९ ॐ कालकालाय नमः
३० ॐ कृपानिधये नमः
३१ ॐ भीमाय नमः
३२ ॐ परशुहस्ताय नमः
३३ ॐ मृगपाणये नमः
३४ ॐ जटाधराय नमः
३५ ॐ कैलासवासिने नमः
३६ ॐ कवचिने नमः
३७ ॐ कठोराय नमः
३८ ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
३९ ॐ वृषाङ्काय नमः
४० ॐ वृषभारूढ़ाय नमः
४१ ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
४२ ॐ सामप्रियाय नमः
४३ ॐ स्वरमयाय नमः
४४ ॐ त्रिमूर्त्तये नमः
४५ ॐ अश्विनीश्वराय नमः
४६ ॐ सर्वज्ञाय नमः
४७ ॐ परमात्मने नमः
४८ ॐ सोमसूर्य्याग्निलोचनाय नमः
४९ ॐ हविषे नमः
५० ॐ यज्ञमयाय नमः
५१ ॐ पञ्चवक्त्राय नमः

www.drcmraina.com

५२ ॐ सदाशिवाय नमः
५३ ॐ विश्वेश्वराय नमः
५४ ॐ वीरभद्राय नमः
५५ ॐ गणनाथाय नमः
५६ ॐ प्रजापतये नमः
५७ ॐ हिरण्यरेतसे नमः
५८ ॐ दुर्घर्षाय नमः
५९ ॐ गिरीशाय नमः
६० ॐ गिरिशायाय नमः
६१ ॐ अनघाय नमः
६२ ॐ भुजंगभूषणाय नमः
६३ ॐ भर्गाय नमः
६४ ॐ गिरिधन्वने नमः
६५ ॐ प्रियाय नमः
६६ ॐ अष्टमूर्त्तये नमः
६७ ॐ अनेकात्मने नमः
६८ ॐ सात्विकाय नमः
६९ ॐ शुभविग्रहाय नमः
७० ॐ शाश्वताय नमः
७१ ॐ खण्डपरशवे नमः
७२ ॐ अजाय नमः
७३ ॐ पाशविमोचकाय नमः
७४ ॐ कृत्तिवाससे नमः
७५ ॐ पुरारातये नमः
७६ ॐ भगवते नमः
७७ ॐ प्रमथाधिपाय नमः

www.drcmraina.com

७८ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः

७९ ॐ सूक्ष्मतनवे नमः

८० ॐ जगद्व्यापिने नमः

८१ ॐ जगद्गुरवे नमः

८२ ॐ व्योमकेशाय नमः

८३ ॐ महासेनाय नमः

८४ ॐ जनकाय नमः

८५ ॐ चारुक्रमाय नमः

८६ ॐ रुद्राय नमः

८७ ॐ भूतपतये नमः

८८ ॐ स्थाणवे नमः

८९ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः

९० ॐ दिगम्बराय नमः

९१ ॐ मृडाय नमः

९२ ॐ पशुपतये नमः

९३ ॐ देवाय नमः

९४ ॐ महादेवाय नमः

९५ ॐ अव्यक्ताय नमः

९६ ॐ हरये नमः

९७ ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः

९८ ॐ भगनेत्रभिदे नमः

९९ ॐ अपवर्गप्रदाय नमः

१०० ॐ अव्यग्राय नमः

१०१ ॐ अव्यक्ताय नमः

१०२ ॐ अनन्ताय नमः

१०३ ॐ दक्षाध्वरहराय नमः

www.drcmraina.com

१०४ ॐ सहस्त्राक्षाय नमः
१०५ ॐ तारकाय नमः
१०६ ॐ हराय नमः
१०७ ॐ सहस्त्रपदे नमः
१०८ ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः

धूपम् – ॐ या ते हेतिर्मीढुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥
बनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपम् – ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥
साज्यं च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्– ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳसहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥
नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं में ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारो भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

www.drcmraina.com

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

(हस्तप्रक्षालनम्)

उद्वर्तनम्– ॐ अꣳशुना तेऽअꣳशुःपृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः॥

फलम्– ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥

धत्तूरफलम् – ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्त्वा क्षित्त्या उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।

ताम्बूलम्– ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा– ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः॥
दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्तिः समर्पिता।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर॥
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि॥

www.drcmraina.com

अथ तर्पणम् – **ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि। ॐ देव देवं तर्पयामि। ॐ ज्येष्ठाय नमः। पुनराचमनीयम्। ॐ श्रेष्ठाय नमः। मधुपर्कः। मधुपर्कं गृहाणेश सर्वदा मधुपर्कपः। मधुपर्क प्रदानेन प्रीतो भव महेश्वर॥ कालाय नमः गन्धः। ॐ कलविकरणाय नमः पुष्पाणि। ॐ सर्वभूतदमनाय नमः धूपः। ॐ मनोन्मनाय नमः दीपः। ॐ भवोद्भवायनमः नैवेद्यम्। अथ अष्टौ पुष्पांजलयः। ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शिवायदेवाय नमः। ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः। ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः। ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु-रुद्ररूपेभ्यः॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात। ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः। ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः। ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः। ॐ पशुपतये यजमान मूर्त्तयेनमः। ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः। एवं सम्पूज्य ततः सहस्रघटैः स्नपनम्।**

आरार्त्तिक्यम्– **ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठसऽआत्वेषं वर्तते तमः॥
इद ꣳहविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये। आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥**

www.drcmraina.com

शिव नीराजनम्

ओं जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा॥
हर हर हर महादेव॥१॥

कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने।
गुञ्जति मधुकरपुंजे कुंज वने गहने॥
कोकिल कूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कला कलापं नृत्यति मुद सहिता।
हर हर हर महादेव॥२॥

तस्मिन् ललित सुर्दशन शाला मणि रचिता।
तन्मध्ये हर निकटे गौरीमुदसहिता।
क्रीडां रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुरसेवित नामयते शीशम्।
हर हर हर महादेव॥३॥

कर्पूरद्युति गौरं पञ्चानन सहितम्।
त्रिनयन शशिधर मौलिं विषधर कण्ठ युतम्॥
सुन्दर जटाकलापं पावकयुतभालं।
डमरु त्रिशूल पिनाकं करधृत नृकपालम्॥
हर हर हर महादेव॥४॥

www.drcmraina.com

मुण्डैः रचयति मालां पन्नग उपवीतं।
वाम विभागे गिरिजा रूपं अतिललितम्॥
सुन्दर सकल शरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वज रूपं तापत्रय हरणम्॥
हर हर हर महादेव॥५॥

ॐ शिवाय नमः नीराजनं समर्पयामि॥

पुष्पाञ्जलि– ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्मांणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे। समे कामान्कामकामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधि-पत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुषऽआन्ता-दापरार्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुतविश्व-तस्पात् सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

शिवगायत्री–ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

www.drcmraina.com

मन्दारमालाङ्कुलितालकायै कपालमालाङ्कित शेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय॥

प्रदक्षिणा– ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥

प्रणामः– ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्क्कराय नमः शिवाय च शिवतराय च॥

क्षमा–प्रार्थना– मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥२॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भव।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव॥३॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।४॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव॥५॥

अनेन यथाशक्तिकृतेन शिवपूजननेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम।
ॐ शिवाय नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ शिवाय नमः।

गाल बजाते हुए बम् बम् बोल कर जलहरी का जल नेत्रों पर लगाएँ।

निरावलम्बस्य ममावलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदम्बम्।
मदीयपापाचलपापशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम्–बम्॥

इति शिवपूजनपद्धतिः समाप्ता।

www.drcmraina.com

आशीर्वाद:—**ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्रावसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।**

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णास्सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रास्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु मे।।
ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।

न तद्रक्षा꣡ꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणꣳहिरणयꣳसदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।

आयुष्यतिलकम् — **ॐ दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतबलशा विरोहतात्।।**

वैदिक अभिषेक:—**ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।**

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।

ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः।।

www.drcmraina.com

पौराणिक अभिषेक :-

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा विभुः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिःश्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां तथा।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
अभिषिञ्चन्तु ते सर्वे धर्मकामार्थसिद्धये।।
अमृताभिषेकोऽस्तु।।

www.drcmraina.com

विसर्जनम्

ॐ यज्ञं यज्ञङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा।
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा।

गणेश्वर त्रिनयन विघ्नव्यूह विनाशन।
शिवलोकं प्रगच्छस्व गणेशाय नमोनमः।१।
ओंकारं चतुरोवेदांश्चातुर्होत्रमुखं प्रभुम्।
गायत्री सहितं देवं नौमि गच्छ स्वमन्दिरम्।२।
हरिं नारायणं कृष्णं गोविन्दं मधुसूदनम्।
मन्दराद्रिधरं नौमि विष्णो गच्छ स्वमालयम्।३।
कल्पनानां पथि सर्वं विभ्रान्तं सचराचरम्।
तेजस्विनं महादेवं नौमि शम्भो गिरिं व्रज।४।
तेजो रूपधरं सूर्यं शाशनं शीतलत्विषम्।
रक्तवर्णधरं भौमं शशिजं हरितप्रभम्।५।
सर्वाविद्या मुखे यस्य सर्वदेवैः प्रपूजितम्।
गुरुं नौमि तवाभक्त्या भार्गवं दैत्यपूजितम्।६।
शनैश्चरं सूर्यसुतं सैंहिकेयं महाबलम्।
केतुं च नौमि शिखिनं ग्रहा गच्छन्तु स्वां पुरीम्।७।

www.drcmraina.com

शक्र गच्छ सुधर्माख्यां वीतिहोत्र स्वमालयम्।
खंयमनीं धर्मराज नैर्ऋतं गच्छ निर्ऋते।८।
वरुण त्वमपांमध्ये वायो गन्धवतीं व्रज।
अलकां याहि यक्षेन्द्र रुद्रा ईशानमण्डलम्।९।
क्षेत्रपाला त्वक्षत्रेषु मातरो मातृमण्डले।
गच्छन्तु सर्वे स्वं स्थानं यजमानवरप्रदाः।१०।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।११।
धान्यं देहि धनं देहि पुत्रपौत्रांश्च देहि मे।
देहि मे ऽआयुरारोग्यं ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।१२।
यत्र देवालयाः सन्ति तत्र गच्छ हुताशन।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।१३।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।१४।

न्यूनं संपूर्णतां यान्ति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।
ॐ विश्व शान्तिः ओं विश्व शान्तिः। ॐ विश्व शान्तिः।

www.drcmraina.com

अथ श्रीसूर्यार्घ्यदानम्

श्रीसूर्याभिमुखस्तिष्ठन् गन्धाक्षतपुष्पयुक्तानि त्रीण्यर्घ्याणि दद्यात्, तत्र मन्त्रः –

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्घ्यं दिवाकर।।
कर्मसाक्षिणे श्रीसूर्यनारायणाय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम।
इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, दत्तार्घ्योदकेन दक्षिणनासाचक्षुः
श्रोत्रस्पर्शनञ्च कुर्यात्

ॐ यानि कानीति प्रदक्षिणीकृत्य–

ॐ एकचक्रो रथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः।
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः।। इति प्रणमेत्।
ॐ यज्ञच्छिद्रं तपश्चिछद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः।
ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजाक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः,
इत्याद्युक्त्वा तूष्णीं त्रिराचमेत्।। ततः

ॐ आपद्घनध्वान्तसहस्त्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्त्तयः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः।।

www.drcmraina.com

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥१॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥२॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥३॥
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥४॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥५॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

www.drcmraina.com

अथवेदसार स्तोत्रम्

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गांगवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम्।।१।।

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्निस्त्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्।।२।।

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्।।३।।

शिवाकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप।।४।।

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्।।५।।

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्त्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे।।६।।

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्।।७।।

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते! नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य।।८।।

www.drcmraina.com

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ! महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे! त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः।।९।।

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे!
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्!।
काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं
हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि।।१०।।
त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे!
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृडविश्वनाथ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश!
लिङ्गात्मकं हर चराचर विश्वरूपिन्।।११।।

ॐ

www.drcmraina.com

शिव स्तुति

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।१।।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशम्।।
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।२।।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभाश्रीशरीरम्।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।।३।।

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालम्।।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।४।।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।५।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।।
चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।६।।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नाराणाम्।।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।७।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम्।।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो।।८।।

शलोक – रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।९।।

www.drcmraina.com

आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भव भवानीसहितं नमामि॥
ॐ जय शिव ओंकारा, भोले हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा॥१॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजे॥२॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै॥३॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

अक्षमाला वनमालारुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी॥४॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

www.drcmraina.com

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे॥५॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूलधर्ता।
सुखकर्ता दुःखहर्ता जगपालनकर्त्ता॥६॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका॥७॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ दर्शन पावै महिमा अति भारी॥८॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

त्रिगुण स्वामि की आरति जो कोई नर गावै।
भणत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फल पावै॥९॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

www.drcmraina.com

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरम्
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कित्तं चन्दनम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्॥१॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलम्
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥२॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥३॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥४॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥५॥

www.drcmraina.com

वेदसारशिवस्तवः

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं
महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम्॥१॥

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं
विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं
सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्॥२॥

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं
गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं
भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्॥३॥

शिवाकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले
महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप॥४॥

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं
निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्॥५॥

www.drcmraina.com

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर्न
चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे॥६॥

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां
शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्॥७॥

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य॥८॥

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ
महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः॥९॥

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं
हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि॥१०॥

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश
लिङ्गात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन्॥११॥

www.drcmraina.com

शिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले

गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।

डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं

चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥१॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-

विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।

धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके

किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥२॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-

स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।

कृपाकटाक्षघोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि

क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥३॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-

कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।

मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे

मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥४॥

सहस्त्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-

प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।

www.drcmraina.com

भुजङ्गराजमालया विबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः।।५।।
ललाटचत्वरज्ज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः।।६।।
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम।।७।।
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः।।८।।
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।।९।।
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।।१०।।

www.drcmraina.com

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः॥११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥१२॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्॥१३॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥१४॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥१५॥

इति श्री रावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

www.drcmraina.com

श्रीविश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलापं
गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम्।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥१॥

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं
वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम्।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥२॥

भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्गं
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्।
पाशाङ्कुशाभयवरप्रदशूलपाणिं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥३॥

शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं
भालेक्षणानलविशोषितपञ्चबाणम्।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥४॥

पञ्चाननं दुरितमत्तमतङ्गजानां
नागान्तकं दनुजपुङ्गवपन्नगानाम्।

www.drcmraina.com

दावानलं मरणशोकजराटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥५॥

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीय-
मानन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम्।
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥६॥

रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम्।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥७॥

आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥८॥

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्॥९॥

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥१०॥

इति श्री महर्षि व्यास प्रणीतं श्रीविश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम्॥

www.drcmraina.com

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥१॥
देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥२॥
सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥३॥
कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥४॥
कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥५॥
देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥६॥
अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥७॥
सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥८॥
लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥९॥

www.drcmraina.com

बाबा अमरनाथ जी की आरती

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

शंकर आज मेरी भावना पूरी करो।

शंकर आज मेरी कामना पूरी करो।

मुझे शक्ति का दान बाबा दिया करो।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

काहे की तेरी रोटी बनी, काहे का तेरा साग

काहे की तेरी भाजी बनी, खावें भोले नाथ।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

आक की तेरी रोटी बनी, धतूरे का साग।

भांग की तेरी भाजी बनी, पावें भोले नाथ।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

कभी रहते अगन-मगन, कभी पीते भंग।

बैल की सवारी करते, गौरा पार्वती के संग।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

अमरनाथ, में भोले बैठे, उनका रूप सवाया।

www.drcmraina.com

संग विराजे पार्वती, गणपत गोद बिठाया।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

अंधा तुझसे नेत्र मांगे, निर्मल मांगे काया।

निपुत्र तुझसे पुत्र मांगे, निर्धन मांगे माया।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

ना मैं तुझसे पुत्र मांगू, ना मांगू मैं माया।

मैं तो तेरी भक्ति मांगू, शरण तुम्हारी आया।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

जो शिवजी की आरती गावे, उसने सब कुछ पाया।

भोले बाबा को प्रेम से गावें, मिट गई सब की माया।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

जो कोई भोले की आरती गावे, उनका रूप सवाया जी।

तुलसीदास भजो भगवान हरि चरण चितलाय।

मेरे नाथों के नाथ, मेरे जटाधारी नाथ, गौरा पार्वती के साथ।

www.drcmraina.com

नटराज स्तुति

सत सृष्टि ताण्डव रचयिता
नटराज राज नमो नमः ......

हे आद्य गुरु शंकर पिता
नटराज राज नमो नमः ....

गंभीर नाद मृङ्गना
धबके उरे ब्रह्माण्डना
नित होत नाद प्रचण्डना
नटराज राज नमो नमः ....

शिर ज्ञान गङ्गा चन्द्रमा
चिद्ब्रह्म ज्योति ललाट मां
विषनाग माला कण्ठ मां
नटराज राज नमो नमः ....

तवशक्ति वामाङ्गे स्थिता
हे चन्द्रिका अपराजिता
चंहु वेद गाए संहिता
नटराज राज नमो नमः ....।

www.drcmraina.com

शिव स्तुति

दिव्य कुण्डल हारमुज्वल मस्तकुज्वल लोलितम्
गाङ्ग कुन्तल नेत्रमुज्वल चन्द्र शीतल भाषितम्
हस्त निर्मल दण्ड त्रिशूल भाल कोमल धारितम्
हे शिवा पति पार्वती पति त्राहिमां भवसागरम्

ब्रह्म रूपिणि विष्णु मोहिनी सर्व क्षेत्राणि शोभितम्
देह धारिणी विष्णु वासिनि रुपकामिनि संचितम्
देव कामिनी नाग पद्मिनी सर्व सुरोमुनि सेवितम्
हे शिवा पति पार्वती पति त्राहिमां भवसागरम्

बह्नि कर्पूर रूप भास्कर पादे नूपुरमर्जितम्
चन्द्र भास्कर कान्ति प्रभाकर कर्म केश्वर सूचितम्
भूत खेचर सिंहशार्दूल प्रेत भूषण भूषितम्
हे शिवा पति पार्वती पति त्राहिमां भवसागरम्

पद्म लोचन नन्दी वाहन शेष भूषण भूषितम्
भस्म लेपन चर्म धारण श्रृष्टि धारण प्रर्चितम्
पञ्च आनन काम मर्दन योग साधन साधितम्
हे शिवा पति पार्वती पति त्राहिमां भवसागरम्

देव किन्नर देव गोचर भूधराधर भूषितम्
आदि गोचर पार्वतीवर मन्त्र साधनसाधितम्
मां शिव त्राहि मां शिव त्राहिं मां हर भाषितं
हे शिवा पति पार्वती पति त्राहिमां भवसागरम्

www.drcmraina.com

ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःखविनसे मन का॥ प्रभु ॥
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी॥ प्रभु॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी॥ प्रभु॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता॥ प्रभु॥
मैं मूर्ख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता॥ ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति॥ प्रभु॥
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ॐ॥
दीन-बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे॥ प्रभु॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ प्रभु॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ॐ॥
तन-मन-धन सब कुछ है तेरा॥ प्रभु॥
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा॥ ॐ॥
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ॐ॥

www.drcmraina.com

अथ श्री शिवमहिम्नस्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथाघ्वाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥१॥

(गन्धर्वराज पुष्पदन्त भगवान् शंकर की स्तुति के उपक्रम में कहते हैं–) "हे पाप हरण करने वाले शंकर जी! आपकी महिमा के आर-पार के ज्ञान से रहित सामान्य (अल्प ज्ञानवान्) व्यक्ति के द्वारा की गयी आपकी स्तुति यदि आपके स्वरूप (माहात्म्य)– वर्णन के अनुरूप नहीं है तो (फिर) ब्रह्मादि देवों की वाणी भी आपकी स्तुति के अनुरूप नहीं है (क्योंकि वे भी आपके गुणों का सर्वथा वर्णन नहीं कर सकते)। किंतु जब सभी लोग अपनी-अपनी बुद्धि (की शक्ति) के अनुसार स्तुति करते हुए उपालम्भ के योग्य नहीं माने जाते हैं, तब मेरा भी स्तुति करने का (यह) प्रयास अपवाद रहित ही होना चाहिए" (यह प्रयास खण्डनीय नहीं है।)॥1॥

O, Lord Shiva, remover of all types of miseries, what wonder is there, if the prayer to you, chanted by one who is ignorant about your greatness, is worthless! Because, even the utterance (speech) of Brahmaa and other gods is not able to fathom your merits (i.e., greatness). Hence, if persons with very limited intellect (and I am one of them) try to offer you a prayer, their attempt deserve your special favour. If it is so, I should not be a exception. Hence, (thinking like this) I begin this prayer. (1)

www.drcmraina.com

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः
अतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥२॥

"आपकी महिमा वाणी और मन की पहुँच से परे है। आपकी उस महिमा का वेद भी (आश्चर्य) चकित (भयभीत) होकर (निषेधमुखेन) नेति-नेति कहते हुए आशय रूप में वर्णन करते हैं। फिर तो उसे अचिन्त्य महिमामय आप किसकी स्तुति के विषय (वर्ण्य) हो सकते हैं? अर्थात् किसी की स्तुति तदर्थ समर्थ नहीं हो सकती; क्योंकि आपके गुण न जाने कितने प्रकार के हैं अर्थात् अनन्त हैं। फिर भी हे प्रभो! नवीन परम रमणीय आपके (सगुण) रूप के विषय में वर्णन के लिये किसका मन आसक्त नहीं होता और किसकी वाणी उसमें प्रवृत्त नहीं होती? अर्थात् सबके मन-वचन सगुण रूप में संलग्न हो जाते हैं, सभी अपनी वाणी एको प्रेरित करके वर्णन में लगा देते हैं।।2।।

O, Great God, so great is your majesty that it cannot be reached by speech and mind. Even the Vedas also, having become surprised, confirm your greatness by only saying `Neti', `Neti' (not this, not this) while describing you. Who can praise this type of greatness of yours? With how many qualities is it composed? Whose subject of description can it be ? And yet even then whose mind and speech are not attached to your this new Saguna form ? (2)

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवचः
तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥३॥

"हे भगवन्! मधुय से सिक्त सी अत्यन्त मधुर एवं परम उत्तम अमृतरूप वेदवाणी की रचना करने वाले देवाधिदेव ब्रह्मदेव की वाणी भी क्या आपके गुणों को प्रकाशित कर आपको चमत्कृत कर सकती है? (कदापि नहीं) फिर भी हे त्रिपुरारि! मेरी बुद्धि आपके गुणानुवादजनित पुण्य से अपनी इस (मलिन वासना से भरी अतएव अपवित्र)

www.drcmraina.com

वाणी को पवित्र करने के लिये (ही) आपके गुण-कथन के द्वारा (की जाने वाली) स्तुति के विषय में उद्यत है" (न कि अपने स्तुति-कौशल से आपका अनुरंजन करूँगा– यह मेरा अभिप्राय है)।।3।।

O, Paramaatmaa (Greatest Soul), as you are the very creator of speech of the Vedas, which is like highest type of nectar and as sweet as honey, how can even the speech of Brahaspati (Guru, or spiritual guide of gods) surprise you? (i.e., the speech of even Brahaspati is worthless before you). O, Destroyer of Three Cities of the demons, thinking that my speech may become purified by this act, my intellect (Buddhi) has become prepared to sing your greatness. (3)

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिस्रुषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।४।।

"हे वर देने वाले शिवजी! आप विश्व का सृजन, पालन एवं संहार करते हैं– ऐसा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद (वेदत्रयी) निष्कर्षरूप से वर्णन करते हैं। इसी प्रकार तीनों गुणों से विभिन्न त्रिमूर्तियों (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) में बँटा हुआ जो इस ब्रह्माण्ड में आपका यह प्रख्यात (रचनात्मक, पालनात्मक एवं संहारात्मक) ऐश्वर्य है, उसके विषय में खण्डन करने के लिये कुछ जडबुद्धि अकल्याणभागी (मन्दों) अभागों (नास्तिकों) को मनोहर लगने वाला पर वास्तव में अशोभनीय या हानिकारक व्यर्थ का मिथ्याप्रलाप (बकवाद) उठाते हैं।।4।।

O, Giver of Boons, your greatness is the cause of creation, maintenance, and destruction of the whole universe; this is supported by three Vedas (i.e., Rigveda, Yajurveda, and Saamaveda); it is distributed in the three qualities (i.e., Satva, Rajas and Tamas) and three bodies (of Brahmaa, VishhNu and Mahesha). Such is your greatness but certain stupid persons in this world are trying to destroy it by slander, which may be delightful to them but is really undelightful. (4)

www.drcmraina.com

किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चित् मुखरयति मोहाय जगतः।।५।।

"हे वरद भगवन्! वह विधाता त्रिभुवन का निर्माण करता है तो उसकी कैसी चेष्टा होती है? उसका स्वरूप क्या है? फिर उसके साधन क्या है? आधार अर्थात् जगत् का उपादान कारण क्या है? इस प्रकार का कुतर्क, सब तर्कों से परे अचिन्त्य ऐश्वर्य वाले आपके विषय में निराधार एवं नगण्य (उपेक्षित) होता हुआ भी संसारिक (साधारण) जनों को भ्रम में डालने के लिए कुछ मूर्खों को वाचाल बना देता है"।।5।।

If the Paramaatmaa (the Greatest Soul) creates the three worlds (i.e., thewhole Universe), what is his gesture ? What is his body ? What is his plan? What is his basis (support)? What are his means (instruments, resources) ? These are the useless questions raised by some stupid critics, in order to mislead people, against one (i.e. , you) who always remains incompatible to senses. (5)

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतां
अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।६।।

"हे देव! श्रेष्ठ अवयव वाले (शरीरधारी) होते हुए भी ये लोक क्या बिना जन्म के ही हैं? (नहीं, कदापि नहीं;) क्या शिव की सृष्टि-पालन-संहार आदि क्रियाएँ बिना (अधिष्ठान) कर्ता के माने सम्भव हो सकती हैं? या ईश्वर के बिना कोई सामान्य जीव ही अधिष्ठान या कर्ता हो सकता है? (नहीं; क्योंकि) यदि असमर्थ जीव ही कर्ता है तो चौदह भुवनों की सृष्टि के लिये उसके पास क्या साधन हो सकता है? (इस प्रकार आपके अस्तित्व के प्रमाण सिद्ध होने पर भी) यतः वे (जडबुद्धि) शंका करते हैं, अतः वे बड़े अभागी हैं"।।6।।

www.drcmraina.com

O, Best Of The Gods, are the seven Lokas (It is believed that there are seven worlds in this Universe, namely, Bhooloka, Bhuvarloka, Svargaloka, Maharloka, Janaloka, Tapaloka, and Satyaloka) unborn ? Was the birth of the Universe independent of its Lord (i.e., You) ? If it was so, then what were the means by which it was created that the stupid critics are creating doubts about you? (i.e., you are the only creater of the whole Universe). (6)

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥७॥

ऋक् यजुः, साम– ये वेद, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, पाशुपतमत, वैष्णवमत आदि विभिन्न मत–मतान्तर हैं। इनमें (सभी लोग हमारा) यह मत उत्तम है, हमारा मत लाभप्रद है (दूसरें का नहीं;) इस प्रकार की रूचियों की विचित्रता से सीधे–टेढ़े नाना मार्गों से चलने वाले साधकों के लिये एकमात्र प्राप्तव्य (गन्तव्य) आप ही नहीं हैं। जैसे सीधे–टेढ़े मार्गों से बहती हुई सभी नदियाँ अन्त में समुद्र में ही पहुँचती हैं, उसी प्रकार सभी मतानुयायी आपके ही पास पहुँचते हैं॥7॥

The different practices based on the three Vedas, SaMkhya, Yoga, Pashupata-mata, VaishhNava-mata etc. are but different paths (to reach to the Greatest Truth) and people on account of their different aptitude choose from them whatever they think best and deserved to be accepted. But as the sea is the final resting place for all types of streams , You are the only reaching place for all people whichever path, straight or zigzag, they may accept. (7)

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥८॥

www.drcmraina.com

हे वरदानी शंकर! बूढ़ा बैल, खटिये का पावा, फरसा, चर्म, भस्म, सर्प, कपाल– बस इतनी ही आपके कुटुम्ब–पालन की सामग्री है। फिर भी इन्द्रादि देवताओं ने आपके कृपा कटाक्ष से ही उन अपनी विलक्षण (अतुलनीय) समृद्धियों (भोगों) को प्राप्त किया है; किंतु आपके पास भोग की कोई वस्तु नहीं है; क्योंकि विषयवासना रूपी मृगतृष्णा स्वरूपभूत चैतन्य आत्माराम में रमण करने वाले को भ्रमित नहीं कर पाती है।।8।।

O, Giver of the Boons, the bull, the parts of a cot, chisel, the elephant-skin, Ashes, the serpent, the skull : these are the articles of your house-hold. And yet gods get all their riches merely by the movement of your eye-brows. Really, false desires for worldly things do not deceive (mislead) one who is always is absorbed in his soul (i.e., the Yogi- in fact You). (8)

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।९।।

हे त्रिपुरारि! कोई वादी इस सम्पूर्ण जगत् को ध्रुव (नित्य) कहता है, कोई इस सबको अध्रुव (असत् या अनित्य) बताता है और कोई तो विश्व के समस्त पदार्थों में कुछ नित्य और कुछ अनित्य है– ऐसा कहता है। उन सब वदों से आश्चर्यचकित–सा मैं उन्हीं वादों (स्तुति–प्रकारों) से आपकी स्तुति करता हुआ लज्जित नहीं हो रहा हूँ; क्योंकि मुखरता (वाचालता) धृष्ट होती ही है (उसे लज्जा कहाँ?)।।9।।

O, Destroyer of (Three) Cities, some persons call this Universe eternal (ever lasting), others call it temporary, and yet others call it both eternal and temporary. Hence, being surprised (perplexed) by these contradictory opinions on this subject, I am really becoming immodest in loquaciously praising You. (9)

www.drcmraina.com

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धा-भरगुरु-गृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥१०॥

हे गिरिश! (अग्नि-स्तम्भ के समान) आपका जो लिंगाकार तैजस रूप (ऐश्वर्य) प्रकट हुआ उसके ओर-छोर को जानने के लिये ऊपर की ओर ब्रह्मा तथा नीचे ओर विष्णु बड़े प्रयत्न से गये; पर (वे दोनों ही) पार पाने में असमर्थ रहे। तब उन दोनों ने श्रद्धा और भक्ति से पूर्ण बुद्धि से नतमस्तक हो आपकी स्तुति की। (तब उनकी स्तुति से प्रसन्न हो) आप उन दोनों के समक्ष स्वयं प्रकट हो गये। हे भगवन्! श्रद्धा-भक्तिपूर्वक की गयी आपकी सेवा (स्तुति) क्या फलीभूत नहीं होती? (अर्थात् अवश्य फलीभूत होती है)॥10॥

Brahma and VishhNu wanted to measure your wealth i. e. greatness. You took the form of Fire and your whole body was a column of fire extending over space. While Brahma took the form of a swan and flew high to see the top (head), VishhNu took the form of a boar and dug up downwards to see the bottom (feet). Neither could succeed. (While VishhNu confessed the truth, Brahma falsely claimed that he had found the top and persuaded the Ketaki flower to bear false witness. Shiva punished Brahma by removing one of his 5 heads and ordered that henceforth the Ketaki flower should not be used for his worship). When ultimately both praised you with full devotion and faith, you stood before them revealing your normal form. O, mountain-dweller, does not toeing your line always bear fruit? (10)

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डू-परवशान्।
शिरःपद्मश्रेणी-रचितचरणाम्भोरुह-बलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥११॥

www.drcmraina.com

हे त्रिपुरारि! दशमुख रावण ने तीनों भुवनों का निष्कण्टक राज्य बिना प्रयत्न (अनायास) प्राप्त कर जो अपनी भुजाओं की युद्ध करने की खुजलाहट न मिटा सका (प्रतिभट से युद्ध करने की इच्छा पूर्ण न कर सका; क्योंकि कोई प्रतिभट मिला ही नहीं), यह आपके चरणकमलों में अपने दस सिर रूपी कमलों की बलि प्रदान करने में प्रवृत्त आप में अविचल भक्ति का ही प्रभाव है।।11।।

Oh, destroyer of the three cities! The effortless achievement of the ten-headed Ravana in making the three worlds enemyless (having conquered) and his arrant eagerness for further fight by stretching his arms, are but the result of his constant devotion to your lotus feet at which he ever laid the lotus garland consisting of his 10 heads! (11)

अमुष्य त्वत्सेवा-समधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।।१२।।

हे त्रिपुरारि! आपकी सेवा से रावण की भुजाओं में शक्ति प्राप्त हुई थी। अभिमान में आकर वह अपना भुजबल आपके निवास-स्थान कैलास के उठाने में भी तौलने लगा, पर आपने जो पैर के अँगूठे की नोक से जरा-सा कैलास को दबा दिया तो उस रावण की प्रतिष्ठा (स्थिति) पाताल में भी दुर्लभ हो गयी। (वह नीचे ही नीचे खिसकता चला गया।) प्रायः यह निश्चित है कि नीच व्यक्ति समृद्धि को पाकर मोह में फँस जाता है (कृतघ्न हो जाता है।)।।12।।

Having obtained all his powers through worshipping you, RavaNa once dared to test the power of his arms at your own dwelling place (Kailash Mountain). When he tried to lift it up, you just moved a toe of your foot on a head of his and lo! Ravana could not find rest or peace even in the nether-world. Surely, power maddens the wicked. Finally RavaNa reestablished his faith in you. (12)

www.drcmraina.com

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चौरपि सतीं
अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोः
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥१३॥

हे वरदानी शंकर! त्रिभुवन को वशवर्ती बनाने वाले बाणासुर ने इन्द्र की अपार (परमोच्च) सम्पत्ति को भी जो अपने समक्ष नीचा कर दिया, वह आपके चरणों के शरणागत (सेवक) उस बाणासुर के विषय में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है; क्योंकि आपके समक्ष सिर झुकाना (नतमस्तक होना) किसकी (किस-किस विषय की) उन्नति के लिये नहीं होता? अर्थात् आपके चरणों में सिर झुकाने से सबकी सब प्रकार की उन्नति होती है।।13।।

Oh boon-giver! BaaNa, the demon king made all the three worlds serve him with all their attendants and even the greatest wealth of Indra was a trifle for him. It was not a surprise at all, since he `dwelt' in your feet; who does not rise in life by bowing his head to you? (13)

अकाण्ड-ब्रह्माण्ड-क्षयचकित-देवासुरकृपा
विधेयस्याघ्सीद् यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोघपि श्लाघ्यो भुवन-भय-भङ्ग-व्यसनिनः॥१४॥

हे त्रिनेत्र शंकर! समुद्रमन्थन से उत्पन्न विष की विषम ज्वाला से असमय में ही ब्रह्माण्ड के नाश के भय से चकित देवों और दानवों पर दयार्द्र होकर विषपान करने वाले आपके कण्ठ में जो कालापन (नीला धब्बा) है, वह क्या आपकी शोभा नहीं बढ़ा रहा है। (अर्थात् महोपकार के कार्य से उत्पन्न होने के कारण और अधिक शोभा बढ़ा रहा है।) वस्तुतः संसार के भय को दूर करने के स्वभाव वाले महापुरुषों का विकार भी प्रशंसनीय होता है।।14।।

When the ocean was being churned by the gods and demons for `Amrit ' (nectar), various objects came forth: at one point, there

www.drcmraina.com

emerged the `Kalakuta' poison which threatened to consume everything. The gods as well as the demons were stunned at the prospect of the entire universe coming to an end, O, three-eyed lord, who is ever compassionate and engaged in removing the fear of the world, you took it (poison) on yourself by consuming it. (On Parvati's holding Shiva's throat at that point, the poison froze blue there itself and Shiva became `Neelakantha'). It is strange that this stain in your neck, though appearing to be a deformity, actually adds to your richness and personality. (14)

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः॥१५॥

हे जगदीश! जिस कामदेव के बाण देव, असुर एवं नरसमूह रूप विश्व में नित्य विजेता रहे, कहीं भी असफल होकर नहीं लौटते थे, वही कामदेव जब आपको अन्य देवताओं के समान (जेय) समझने लगा, तब आपके देखते ही स्मृतिमात्र शेष रह गया (भस्म हो गया) और (सच है कि) जितेन्द्रियों का अपमान (उन्हें विचलित करने का उपक्रम) कल्याणकारी नहीं (अपितु घातक) होता है।।15।।

The cupid's (love-god `manmatha's) (flower) arrows never return unaccomplished whether the victims were gods or demons or men. However O, master! he has now become just a remembered soul (without body), since he looked upon you as any other ordinary god, shot his arrow and got burnt to ashes, in no time. Insulting, masters (who have controlled their senses), does one no good. (15)

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद् भुज-परिघ-रुग्ण-ग्रह- गणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृत-जटा-ताडित-तटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥१६॥

www.drcmraina.com

हे ईश! जब आप ताण्डव (नर्तन) करते हैं तब आपके पैरों के आघात (चोट)– से पृथ्वी अचानक संशय (संकट) को प्राप्त हो जाती है; आकाशमण्डल के ग्रह–नक्षत्र–तारे आपके घूमते हुए भुजदण्ड (की चोट) से पीड़ित हो जाते हैं (अतः आकाशमण्डल भी संकटग्रस्त हो जाता है)। स्वर्ग आपकी खुली (बिखरी) हुई जटाओं के किनारों की चोट से बारम्बार दुःखद स्थिति को प्राप्त हो जाता है। यद्यपि आप जगत् की रक्षा के लिये ही ताण्डव करते हैं; फिर भी आपकी प्रभुता (तो) वाम (क्षोभद) हो ही जाती है (सच है सम्पत्तिवाले का उचित कार्य भी विक्षोभ उत्पन्न कर देता है)।।16।।

You dance for protecting the world, but strangely, your glorious act appears to produce the opposite result in that the earth suddenly struck by your dancing feet doubts that it is coming to an end; even Vishhnu's domain is shaken in fear when your mace like arms bruise the planets; the godly region feels miserable when its banks are struck by your agitated matted locks (of hair)! (16)

वियद्व्यापी तारा–गण–गुणित–फेनोद्गम–रुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमिति
अनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।।१७।।

हे जगदीश! समस्त आकाश में फैले तारों के सदृश फेन की शोभा वाला जो गंगाजल का प्रवाह है, वह आपके सिर पर जलविन्दु के समान (छोटा) दिखायी पड़ा और (सिर से नीचे गिरने पर) उसी जलविन्दु ने समुद्र रूपी करधनी (वलय) के भीतर संसार को द्वीप के समान बना दिया। बस, इसी से आपका दिव्य शरीर सर्वोत्कृष्ट है– यह अनुमेय हो जाता है।।17।।

The divine river flows extensively through the sky and its charm is enhanced by the illumination of the foam by the groups of stars. (Brought down to the earth by the King Bhagiratha by propitiating Lord Shiva and known as Ganga) it creates many islands and whirlpools on the earth. The same turbulent river appears like a mere droplet of water on your head. This itself shows how lofty and divine your body (form) is! (17)

www.drcmraina.com

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ-चरण-पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बर-विधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥१८॥

हे परमेश्वर! त्रिपुरासुर रूपी तृण को दग्ध करने के इच्छुक आपने पृथ्वी को रथ, ब्रह्मा को सारथि, सुमेरु पर्वत को धनुष, चन्द्र और सूर्य को रथ के दोनों चक्के और चक्रपाणि विष्णु को (जो) बाण बनाया, (तो) यह सब आडम्बर (समारम्भ) करने का क्या प्रयोजन था? सर्वसमर्थ आप उसे अपने इच्छामात्र से जला सकते थे) निश्चय ही अपने वशवर्ती (हाथ में स्थित) खिलौनों से खेलती हुई ईश्वर की बुद्धि पराधीन नहीं होती (अर्थात् वह स्वतन्त्र रूप से अपने खिलौनों से खेलती रहती है)॥18॥

When you wanted to burn the three cities, you had the earth as the chariot, Brahma as the charioteer, the Meru mountain as the bow, the sun and the moon as the parts of the chariot and VishhNu himself (who holds the chariot-wheeel in his hand - Sudarshan chakra?), as the arrow. Why this demonstrative show when you as the dictator of everything, could have done the job as a trifle? The Lord's greatness is not dependent on anybody or anything. (Incidentally there is a view that the burning of the three cities would refer to the burning of three kinds of bodies of man i. e. `Sthula Sharira', `Sukshma sharira' and `Karana sharira'). (18)

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिमाधाय पदयोः
यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषः
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥१९॥

हे त्रिपुरारि! भगवान् विष्णु ने आपके चरणों में एक हजार कमल चढ़ाने का संकल्प किया था। उनमें जो एक कमल कम पड़ गया तो उन्होंने अपना ही नेत्रकमल उखाड़ कर चढ़ा दिया। बस, उनकी यही भक्ति की पराकाष्ठा सुदर्शन चक्र का स्वरूप धारण कर त्रिभुवन की रक्षा के लिये सदा जागरूक है (भगवान् शंकर ने

www.drcmraina.com

प्रसन्न होकर श्रीविष्णु को चक्र प्रदान कर दिया था, जो विश्व का संरक्षण अनुग्रह-निग्रह द्वारा करता है)।।19।।

VishhNu once brought 1000 lotuses and was placing them at your feet; after placing 999 flowers he found that one was missing; he plucked out one of his own eyes and offered it as a lotus; this supreme exemplification of devotion on his part was transformed into the wheel (sudarshana chakra) in his hand, which he uses for protecting the world. (19)

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान-प्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥२०॥

हे त्रिपुरारि! (बिना फल दिये ही) यज्ञादि के समाप्त हो जाने पर यज्ञकर्ताओं का यज्ञ फल से सम्बन्ध करने के लिये (फल दिलाने के लिये) आप तत्पर रहते हैं। कर्म तो करने के बाद नष्ट हो जाता है (वह जड है)। अतः चेतन परमेश्वर की आराधना के बिना वह नष्ट कर्म फल देने में समर्थ नहीं होता है। इसलिये आपको यज्ञों के फल देने में समर्थ दाता देखकर पुण्यात्मा लोग वेदवाक्यों में श्रद्धा-विश्वास रखकर (यज्ञ) कर्म में तत्पर रहते हैं।।20।।

You ensure that there is a connection between cause and effect and hence when men perform a sacrifice they obtain good results. Otherwise how can there be future result for a past action? Thus on seeing your power in rewarding people performing sacrificial worship, with good results, men believe in Vedas and firmly engage themselves in various worshipful acts. (20)

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतां
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुर-गणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफल-विधान-व्यसनिनः
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा-विधुरमभिचाराय हि मखाः॥२१॥

www.drcmraina.com

हे शरणदाता शंकर! कार्य में कुशल प्रजाजनों का स्वामी प्रजापति दक्ष यज्ञ का यजमान (क्रतुपति) बना था। त्रिकालदर्शी ऋषिगण याज्ञिक (यज्ञ कराने वाले होता आदि) थे। देवगण यज्ञ के सामान्य सदस्य थे। फिर भी यज्ञफल के वितरण के व्यसनी आपसे ही यज्ञ का विध्वंस हो गया। अतः यह निश्चित है कि अश्रद्धा से किये गये यज्ञ (कर्म) कर्ता के विनाश के लिये ही सिद्ध हाते हैं (दक्ष ने श्रद्धावर्जित यज्ञ किया था)।।21।।

All the same, O Protector. though you exert to reward all sacrifices. those done without faith in you become counter-productive, as exemplified in the case of the sacrifice performed by Daksha; Daksha was well-versed in the art of sacrifices and himself the Lord of Creation; besides, he was the chief performer: the great maharishis were the priests and the various gods were the participants! (Daksha did not invite Shiva and insulted him greatly; thus enraged, Shiva destroyed the sacrifice and Daksha too). (21)

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद् भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।।२२।।

हे स्वामिन्! (एक बार) कामुक ब्रह्मा ने अपनी दुहिता से हठपूर्वक रमण करने की इच्छा की। वह लज्जा से मृगी बनकर भागी; तब ब्रह्मा भी मृग बनकर उसके पीछे दौड़े। आपने भी उन्हें दण्ड देने के लिये मृग के शिकारी के वेग के समान हाथ में धनुष लेकर बाण चला दिया। स्वर्ग में जाने पर भी ब्रह्मा आपके बाण से भयभीत हो रहे हैं। उन्हें बाण ने आज भी नहीं छोड़ा है; अर्थात् ब्रह्मा 'मृगशिरा' नक्षत्र बनकर भागे तो बाण 'आर्द्रा' नक्षत्र बनकर आज भी पीछा करता है (ये दोनों आकाशमण्डल में आगे-पीछे देखे जा सकते हैं)।।22।।

(यह पौराणिक कथा है कि एक बार ब्रह्मा अपनी दुहिता सन्ध्या को अत्यन्त रूप-लावण्यवती देखकर मोहित हो गये। उन्होंने अपगमन करना चाहा। सन्ध्या लज्जा के मारे मृगी बनकर भाग चली। ब्रह्मा ने मृग रूप बना लिया और पीछा किया। इस अनर्थ को देखकर भगवान् भूतभावन ने प्रजानाथ को दण्डित करने के लिये पिनाक

www.drcmraina.com

चढ़ाकर बाण छोड़ दिया। उससे पीड़ित तथा लज्जित होकर ब्रह्मा मृगशिरा नक्षत्र हो गये। फिर रुद्र का बाण भी आर्द्रा नक्षत्र होकर उनके पीछे–भाग में लग गया। वह आज भी उनके पीछे लगा हुआ दीखता है।)

O, Protector! Once Brahma became infatuated with his own daughter. When she fled taking the form of a female deer he also took the form of a male deer and chased her. You took the form of a hunter and went after him, with a bow in hand. Struck by your arrow and very much frightened, Brahma fled to the sky taking the form of a star. Even today he stands frightened by you. (22)

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत-देहार्ध-घटनात्
अवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥२३॥

हे त्रिपुरारि! हे यम–नियमपरायण! हे वरद शंकर! अपने सौन्दर्य से शिव पर विजय प्राप्त कर लूँगा– इस सम्भावना से हाथ में धनुष उठाये हुए कामदेव को सामने ही तुरंत आपके द्वारा तिनके की भाँति भस्म होता हुआ देखकर भी यदि देवी (पार्वती जी) अर्धनारीश्वर (आधे शरीर में पार्वती को स्थान देने) के कारण आपको स्त्रीभक्त जानती हैं तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है; क्योंकि स्त्रियाँ (स्वभावतः) अज्ञानी होती है।।23।।

O, destroyer of the three cities! Boon-giver! Practitioner of austerities! Before the very eyes of Parvati, you reduced Manmatha (the god of love) to ashes, the moment he tried to arouse passion in you for Parvati, by shooting his famous flower arrows. Even after witnessing this, if Parvati, thinks that you are attracted by her physical charm, on the basis of your sharing half the body with her, certainly women are under self-delusion. (23)

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः
चिता-भस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी-परिकरः।

www.drcmraina.com

अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तघ्णां वरद परमं मङ्गलमसि॥२४॥

हे कामरिपु! हे वरद शंकर जी! आप श्मशानों में क्रीडा करते हैं, प्रेत-पिशाचगण आपके साथी हैं, चिता की भस्म आपका अंगराग है, आपकी माला भी मनुष्य की खोपड़ियों की है। इस प्रकार यह सब आपका अमंगल स्वभाव (स्वाँग) देखने में भले ही अशुभ हो, फिर भी स्मरण करने वाले भक्तों के लिये तो आप परम मंगलमय ही हैं॥24॥

O, boon giver! O, destroyer of Cupid! You play in the burning ghats. your friends are the ghosts. Your body is smeared with the ashes of the dead bodies. Your garland is of human skulls. Every aspect of your character is thus inauspicious. Let it be. It does not matter. Because, with all these known oddness, you are quick to grant all auspicious things to the people who just think of you. (It is interesting to note here that in his Devi Aparaadha Kshamapana Stotra Shankaracharya says that, despite his poor and deficient possessions, Shiva got the power to grant boons entirely because of his having taken the hand of Parvathi in marriage; in the previous shloka, Pushhpadanta calls it naive on the part of Parvati, if she thinks that Shiva is attracted by her charm simply because he is sharing half the body with her. This dichotomy etc. is due to the custom that when a particular lord is to be extolled, the other gods are to be belittled to some extent). (24)

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्त-मरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद-सलिलोत्सङ्गति-दृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्॥२५॥

हे प्रभो! (शम-दम आदि साधनों से सम्पन्न) यमी लोग शास्त्रोपदिष्ट विधि से वायु रोककर (प्राणायाम कर) हृदय कमल में मन को बहिर्मुखी (संकल्प-विकल्पात्मक) सभी वृत्तियों से शून्य करके अपने भीतर जिस किसी विलक्षण (आनन्दरूप परब्रह्म चिन्मात्र) तत्त्व का दर्शन कर रोमांचित हो जाते हैं और उनकी आँखें आनन्द के

www.drcmraina.com

आँसुओं से भर जाती हैं। उस समय मानो वे अमृत के समुद्र में अवगाहन कर दिव्य आनन्द का अनुभव करते हैं; वह निर्गुण आनन्दस्वरूप ब्रह्म निश्चय रूप से आप ही हैं।।25।।

The great yogis regulate their breath, control and still their mind, look inward and enjoy the bliss with their hair standing on edge and eyes filled with tears of joy. It looks as though they are immersed in nectar. That bliss which they see in their heart and exult thus, is verily you Yourself! (25)

(The second line has an alternate (paaThabheda), salilotsa. ngita (salila + utsa. ngita). However, utsa. ngati is more appropriate than sa. ngita, both in terms of meaning and grammar! sa. ngita has grammatical problems (it needs to be sa. ngIta which does not fit the meter! It may as well be some printer's mistake originally which got reprinted in newer books.)

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः
त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत् त्वं न भवसि।।२६।।

हे भगवन्! परिपक्व बुद्धि वाले प्रौढ़ विद्वान् आप सूर्य हैं, आप चन्द्र हैं, आप पवन हैं, आप अग्नि हैं, आप जल हैं, आप आकाश हैं, आप पृथ्वी हैं, आप आत्मा हैं— इस प्रकार की सीमित अर्थयुक्त वाणी आपके विषय में करते रहे हैं; पर हम तो विश्व में ऐसा कोई तत्त्व (वस्तु) नहीं देखते (जानते) जो स्वयं साक्षात् आप न हों।।26।।

You are the sun, the moon, the air, the fire, the water, the sky (ether/space), and the earth (the five elements or `Bhuta's). You are the Self which is omnipresent. Thus people describe in words every attribute as yours. On the other hand, I do not know any fundamental principle or thing or substance, which you are not!. (26)

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरान्
अकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति।

www.drcmraina.com

तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥२७॥

हे शरण देने वाले! ओम्– यह शब्द अपने व्यस्त (पृथक्-पृथक् अक्षर वाले) अकार, उकार, मकाररूप से तीनों वेद (ऋक्, यजुः, साम), तीनों अवस्था (जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति), तीनों लोक (स्वर्ग-भूमि-पाताल), तीनों देवता (ब्रह्मा-विष्णु-महेश), तीनों शरीर (स्थूल-सूक्ष्म-कारण), तीनों रूप (विश्व-तैजस-प्राज्ञ) आदि के रूप में आपका ही प्रतिपादन करता है तथा अपने अवयवों के समष्टि (संयुक्त-समस्त) रूप (ओम्) से निर्विकार निष्कल तीन अवस्था एवं त्रिपुटियों से रहित आपके तुरीय स्वरूप की सूक्ष्म ध्वनियों से ग्रहण कर प्रतिपादन करता है (ॐ आपके स्वरूप का सर्वतः निर्वचन करता है)॥27॥

O, grantor of refuge and protection! The word `OM' consists of the three letters `a', `u' and `m'. It refers to the three Vedas (Rik, Yajuh and SAma), the three states (Jaagrat. h, Swapna, and sushhupti-awakened, dreaming and sleeping), the three worlds (Bhuh, Bhuvah and Suvah) and the three gods (Brahma, VishhNu amd Mahesha). It refers to you yourself both through the individual letters as well as collectively; in the latter form (i.e. the total word `OM') it refers to your omnipresent absolute nature, as the fourth state of existence i.e. `Turlyam' (sleep-like yet awakened and alert state, as a fully-drawn bow). (27)

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहान्
तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मैधाम्ने प्रणिहित-नमस्योघस्मि भवते॥२८॥

हे महादेव! आपके जो आठ अभिधान (नाम)– भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महादेव, भीम और ईशान हैं, उनमें प्रत्येक में वेदमन्त्र भी पर्याप्त मात्रा में विचरण करते हैं और वेदानुगामी पुराण भी इन नामों में विचरते हैं; अर्थात् वेद-पुराण सभी उन आठों

www.drcmraina.com

नामों का अतिशय प्रतिपादन करते हैं। अतः परम प्रिय एवं प्रत्यक्ष समस्त जगत् के आश्रय आपको मैं साष्टांग प्रणाम करता हूँ।।28।।

I salute you as the dear abode of the following 8 names:bhava, sharva, rudra, pashupati, ugra, Sahamahan, Bhiima, and Ishaana; the `Vedas' also discusses individually about these names. (28) (Also a variation of first and second lines as sahamahAnstathaa.)

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमः
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमः
नमः सर्वस्मै ते तदिदमतिसर्वाय च नमः।।२९।।

हे अति निकटवर्ती और एकान्त (निर्जन) वन-विहार के प्रेमी! आपको प्रणाम है; अति दूरवर्ती आपको प्रणाम है। हे कामारि! अति लघु (सूक्ष्मरूपधारी) आपको प्रणाम है। हे अति महान्! आपको प्रणाम है। हे त्रिनेत्र वृद्धतम! आपको नमस्कार है; अत्यन्त युवक! आपको प्रणाम है। सर्वस्वरूप! आपको नमस्कार है; परोक्ष, प्रत्यक्ष पद से परे अनिर्वचनीय सबके अधिष्ठान स्वरूप! आपको नमस्कार है।।29।।

O, destroyer of Cupid! O, the three-eyed one! Salutations to you, who is the forest-lover, the nearest and the farthest; the minutest and the biggest, the oldest and the youngest; salutations to you who is everything and beyond everything! (29)

बहुल-रजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबल-तमसे तत् संहारे हराय नमो नमः।
जन-सुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।३०।।

विश्व की सृष्टि के लिये रजोगुण की अधिकता धारण करने वाले ब्रह्मारूपधारी! आपको बारम्बार नमस्कार है। विश्व के संहार के लिये तमोगुण की अधिकता धारण करने वाले हर (रुद्र) रूपधारी! आपको बारम्बार नमस्कार है। समस्त जीवों के सुख

www.drcmraina.com

(पालन) के लिये सत्त्वगुण की अधिकता धारण करने वाले विष्णुरूपधारी (आप) मृड को बारम्बार नमस्कार है। स्वयं प्रकाश मोक्ष के लिये त्रिगुणातीत, समस्त द्वैत से रहित मंगलमय अद्वैत (आप) शिव को बारम्बार नमस्कार है।।30।।

Salutations to you in the name of'Bhava' in as much as you create the world by taking the `rajas' as the dominant quality; salutations to you in the name of `Hara' in as much as you destroy the world by taking the `tamas' as the dominant quality; salutations to you in the name of `Mrida', in as much as you maintain and protect the world by taking `Satva' as the dominant quality. Again salutations to you in the name of Shiva in as much as you are beyond the above-mentioned three qualities and are the seat of the supreme bliss. (30)

कृश-परिणति-चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुण-सीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्य-पुष्पोपहारम्।।३१।।

हे वरद शिव! (अविद्या आदि) कष्टों के वशीभूत (अल्प शक्तियुक्त) कहाँ तो यह मेरा चित्त और कहाँ सम्पूर्ण गुणों की सीमा के बाहर पहुँची सदा (त्रिकाल) स्थायिनी आपकी ऋद्धि (विभूति)। (दोनों में बहुत असमानता है।) इसी भय से ग्रस्त आपके चरणों की भक्ति ने मुझे उत्साहित कर आपके चरणों में मुझसे वाक्यरूपी पुष्पोपहार, वाक्यकुसुमांजलि, वाक्यचय की स्तुति रूपी अंजलि समर्पित करायी है।।31।।

O, boon-giver! I was very perplexed to sing your praise considering my little awareness and afflicted mind vis-a-vis your ever increasing limitless quality; however, my devotion to you made me set aside this diffidence and place these floral lines at your feet. (31)

असित-गिरि-समं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे
सुर-तरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।

www.drcmraina.com

लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥३२॥

हे ईश! यदि काले पर्वत के समान स्याही हो, समुद्र की दावात हो, कल्पवृक्ष की शाखाओं की कलम बने, पृथ्वी कागज बने और इन साधनों से यदि सरस्वती (स्वयं) सर्वदा (जीवनपर्यन्त) आपके गुणों को लिखें तब भी वे आपके गुणों का पार नहीं पा सकेंगी।।32।।

O, great master! Even, if one were to assume that the blue mountain , the ocean, the heavenly tree and the earth are the ink, the ink-pot, the pen and the paper respectively and the goddess of learning (Saraswati) herself is the writer, she will not be able to reach the frontiers of your greatness, however long she were to write! (32)

असुर - सुर - मुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दु - मौलेः
ग्रथित-गुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकल-गण-वरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानः
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।।३३।।

इस प्रकार शिव के सभी गणों में श्रेष्ठ पुष्पदन्त नामक गन्धर्व ने दैत्येन्द्रों, सुरेन्द्रों एवं मुनीन्द्रों से पूजित, समस्त गुणों से परिपूर्ण होते हुए भी निर्गुण जगदीश्वर चन्द्रशेखर भगवान् शिवजी के इस सुन्दर स्तोत्र को बड़े छन्दों में (स्तुति-हेतु) बनाया।।33।।

The best one among all groups (Gandharva?), Pushhpadanta by name, composed this charming hymn in none too short metres, in praise of the great lord who wears the moon in his head (Shiva), who is worshipped and glorified by all demons, gods and sages and who is beyond all attributes and forms. (33)

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् पठति
परमभक्त्या शुद्ध-चित्तः पुमान् यः।

www.drcmraina.com

स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाघ्त्र
प्रचुरतर-धनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च॥३४॥

जो व्यक्ति पवित्र अन्तःकरण (हृदय) से परम भक्ति के साथ भगवान् शंकर के इस प्रशंसनीय स्तोत्र का नित्य पाठ करता है, वह इस लोक में पर्याप्त धन एवं आयु को पाता है, पुत्रवान् और यशस्वी होता है तथा (मृत्यु के बाद) शिवलोक को प्राप्त कर शिव के समान (आनन्दमग्न) रहता है॥34॥

Whoever reads this faultless hymn of Shiva daily, with pure mind and great devotion, ultimately reaches Shiva's domain and becomes equal to him; in this world, he is endowed with children, great wealth, long life and fame. (34)

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥३५॥

महेश से बढ़कर (उत्तम) कोई देवता नहीं है, (इस) शिवमहिम्नःस्तोत्र से बढ़कर कोई स्तोत्र नहीं है। अघोरमन्त्र से बढ़कर कोई मन्त्र नहीं है, गुरु से बढ़कर कोई तत्त्व नहीं है॥35॥

There is no God higher than Mahesha; there is no hymn better than this one. There is no `mantra' greater than `OM' and there is no truth or principle beyond one's teacher/spiritual guide. (35)

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥३६॥

मन्त्र आदि की दीक्षा, दान, तप, तीर्थाटन, ज्ञान तथा यज्ञादि— ये सब शिवमहिम्नःस्तोत्र की सोलहवीं कला (अंश) को भी नहीं पा सकते॥36॥

Initiation (into spiritual development), charity, penance, pilgrimage, spiritual knowledge and religious acts like sacrifices are not capable of yielding even one-sixteenth of the return that will result from the reading of this hymn. (36)

www.drcmraina.com

कुसुमदशन-नामा सर्व-गन्धर्व-राजः
शशिधरवर-मौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निज-महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्य-दिव्यं महिम्नः॥३७॥

बालचन्द्र को सिर पर धारण करने वाले देवाधिदेव महादेव का पुष्पदन्त नामक एक दास, जो सभी गन्धर्वों का राजा था, इन शिव जी के कोप से अपने ऐश्वर्य से च्युत हो गया था। (उसके बाद) उसने इस परम दिव्य शिवमहिम्नः स्तोत्र की रचना की (जिससे पुनः उसने उनकी कृपा प्राप्त की)॥37॥

Kusumadanta (equivalent of Pushhpadanta) was the king of all Gandharvas and he was a devotee of the Lord of lords, Shiva, who wears the baby moon (with a few digits only) in his head. He fell from his glorious position due to Shiva's wrath at his misconduct. It was then that the Gandharva composed this hymn which is the most divine. (37)

सुरगुरुमभिपूज्य स्वर्ग-मोक्षैक-हेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्य-चेताः।
व्रजति शिव-समीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥३८॥

यदि मनुष्य हाथ जोड़कर एकाग्रचित्त से देवताओं, मुनियों के पूज्य, स्वर्ग एवं मोक्ष को देने वाले, पुष्पदन्तरचित इस अमोघ (अवश्य फल देने वाले) स्तोत्र का पाठ करता है तो वह किन्नरों से स्तुति (प्रशंसा) प्राप्त करता हुआ भगवान् शिव के समीप (शिवलोक में) पहुँच जाता है॥38॥

If an aspirant for heaven and liberation, worships Shiva, the teacher of gods, at first and then reads this unfailing hymn, composed by Pushhpadanta, with folded hands and single-mindedness, he attains Shiva's abode, being praised by `kinnaras' (a group of semi gods known for their singing talent). (38)

www.drmolraina.com

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व-भाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि सर्वमीश्वरवर्णनम्॥३९॥

पुष्पदन्तरचित यह सम्पूर्ण स्तोत्र (आदि से अन्त तक) पवित्र है, अनुपम है, मनोहर है, शिव (मंगलमय) है। इसमें ईश्वर (शिव) का वर्णन है।।39।।

Here ends this meritorious, charming and incomparable hymn, uttered by the Gandharva, all in description of the great master. (39)

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्कर-पादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥४०॥

उस पुष्पदन्त ने यह शिवमयी पूजा श्रीमान् शंकर के चरणों में समर्पित की है। उसी प्रकार मैंने भी (पाठरूपी पूजा) समर्पित की है। अतः इससे सदाशिव मुझ पर (भी प्रसन्न हों।।40।।

Thus, this worship in the form of words, is dedicated at the feet of Shri Shankara; may the ever-auspicious lord of the gods be pleased with this. (40)

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥४१॥

हे महेश्वर! मैं आपका तत्त्व (वास्तविक रूप) नहीं जानता, आप कैसे हैं– इसका ज्ञान मुझे नहीं है। आप चाहे जैसे हों, वैसे ही आपको बार-बार प्रणाम है।।41।।

I do not know the truth of your nature and how you are. O, great God! My Salutations are to that nature of yours of which you really are. (41)

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपाप-विनिर्मुक्तः शिव लोके महीयते॥४२॥

www.drcmraina.com

जो मनुष्य शिवमहिम्न:स्तोत्र का पाठ एक समय, दोनों समय या तीनों समय करेगा, वह समस्त पापों से छुटकारा पाकर शिवलोक में पूजित होगा।।42।।

Whoever reads this once, twice or thrice (in a day) revels in the domain of Shiva, bereft of all sins. (42)

श्री पुष्पदन्त-मुख-पङ्कज-निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिष-हरेण हर-प्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः।।४३।।

पुष्पदन्त के मुख कमल से निकले हुए पापहारी शिवजी के प्रिय इस स्तोत्र को कण्ठस्थ (याद) कर एकाग्रचित (मनोयोग) से पाठ करने से समस्त प्राणियों के स्वामी महेश बहुत प्रसन्न होते हैं।।43।।

This hymn which is dear to Shiva, has emerged out of the lotus-like mouth of Pushhpadanta and is capable of removing all sins. May the lord of all beings become greatly pleased with anyone who has learnt this by heart and/or reads or recalls this with single-mindedness! (43)

॥ इति श्री पुष्पदन्त विरचितं शिवमहिम्नः स्तोत्रं समाप्तम् ॥

।। इस प्रकार गन्धर्वराजपुष्पदन्तकृत शिवमहिम्न:स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ।।

Thus ends the `shivamahimna hymn' composed by Pushhpadanta.

www.drcmraina.com

श्रीशिवरामाष्टकस्तोत्रम्

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविधतापनिवारण हे विभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥१॥

कमललोचन राम दयानिधे हर गुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भव शङ्कर पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥२॥

सुजनरञ्जन मङ्गलमन्दिरं भजति ते पुरुषः परमं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमद्भुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥३॥

जय युधिष्ठिरवल्लभ भूपते जय जयार्जितपुण्यपयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तु ते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥४॥

भवविमोचन माधव मापते सुकविमानसहंस शिवारते।
जनकजारत राघव रक्ष मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥५॥

अवनिमण्डलमङ्गल मापते जलदसुन्दर राम रमापते।
निगमकीर्तिगुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥६॥

पतितपावन नाममयी लता तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥७॥

अमरतापरदेव रमापते विजयतस्तव नामधनोपमा।
मयि कथं करुणार्णव जायते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥८॥

हनुमतः प्रिय चापकर प्रभो सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो।
मम विभो किमविस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥९॥

अहरहर्जनरञ्जनसुन्दरं पठति यः शिवरामकृतं स्तवम्।
विशति रामरमाचरणाम्बुजे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्॥१०॥

प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेकाग्रमानसः।
विजयो जायते तस्य विष्णुमाराध्यमाप्नुयात्॥११॥

इति श्रीरामानन्दस्वामिना विरचितं श्रीशिवरामाष्टकं सम्पूर्णम्।

www.drcmraina.com

पवन मन्द सुगन्ध शीतल

पवन मन्द सुगन्ध शीतल,
हेम मन्दिर शोभितम्।
निकट गंगा बहत निर्मल,
श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

शेष सुमिरन करत निशदिन,
धरत ध्यान महेश्वरम्।
वेद ब्रह्मा करत स्तुति,
श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
ॐ पवन मन्द सुगन्ध शीतल.....

शक्ति गौरी गणेश शारद,
नारद मुनि उच्चारणम्।
जोग ध्यान अपार लीला,
श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
ॐ पवन मन्द सुगन्ध शीतल.....

इन्द्र चन्द्र कुबेर धुनि कर,
धूप दीप प्रकाशितम्।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय,
बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
ॐ पवन मन्द सुगन्ध शीतल.....

www.drcmraina.com

यक्ष किन्नर करत कौतुक,
ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम्।
श्री लक्ष्मी कमला चंवरडोल,
श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
ॐ पवन मन्द सुगन्ध शीतल.....

कैलाश में एक देव निरञ्जन,
शैल शिखर महेश्वरम्।
राजयुधिष्ठिर करत स्तुति,
श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥
ॐ पवन मन्द सुगन्ध शीतल.....

श्री बद्रजी के पंच रत्न,
पढत पाप विनाशनम्।
कोटि तीर्थ भवेत पुण्य,
प्राप्यते फलदायकम्॥
ॐ पवन मन्द सुगन्ध शीतल.....

पवन मन्द सुगन्ध शीतल,
हेम मन्दिर शोभितम्।
निकट गंगा बहत निर्मल,
श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

www.drcmraina.com

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥२॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥५॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥८॥

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।

www.drcmraina.com

मङ्गलगीतम्

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए।
कलितललितवनमाल जय जय देव हरे॥१॥

दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए।
मुनिजनमानसहंस जय जय देव हरे॥२॥

कालियविषधरगञ्जन जनरञ्जन ए।
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे॥३॥

मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए।
सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे॥४॥

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए।
त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे॥५॥

समरशमितदशकण्ठ जितदूषण ए।
जनकसुताकृतभूषण जय जय देव हरे॥६॥

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे॥८॥

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे॥८॥

श्रीजयदेवकवेरुदितमिदं कुरुते मुदम्।
मङ्गलमञ्जुलगीतं जय जय देव हरे॥९॥

इति श्रीजयदेवविरचितं मङ्गलगीतं सम्पूर्णम्।

www.drcmraina.com

श्रीभगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पापविनाशिनि बहुफलदे।
जय शुम्भनिशुम्भकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे॥१॥

जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे॥२॥

जय महिषविमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देवि पितामहविष्णुनुते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते॥३॥

जय षण्मुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनि शम्भुनुते।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे॥४॥

जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे।
जय व्याधिविनाशिनि मोक्षकरे, जय वाञ्छितदायिनि सिद्धिवरे॥५॥

एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा॥६॥

इति व्यासकृतं श्रीभगवतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

www.drcmraina.com

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं। गतिस्त्वं॰॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्।
गतिस्त्वं॰॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं॰॥४॥

www.drcmraina.com

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्। गतिस्त्वं॰॥५॥

व्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये। गतिस्त्वं॰॥६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं॰॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं। गतिस्त्वं॰॥८॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्।

www.drcmraina.com

गौरीशाष्टकम्

भज गौरीशं भज गौरीशं गौरीशं भज मन्दमते। (ध्रुवपदम्)

जलभवदुस्तरजलधिसुतरणं ध्येयं चित्ते शिवहरचरणम्।
अन्योपायं न हि न हि सत्यं गेयं शङ्कर शङ्कर नित्यम्। भज० ॥१॥

दारापत्यं क्षेत्रं वित्तं देहं गेहं सर्वमनित्यम्।
इति परिभावय सर्वमसारं गर्भविकृत्या स्वप्नविचारम्। भज० ॥२॥

मलवैचित्ये पुनरावृत्तिः पुनरपि जननीजठरोत्पत्तिः।
पुनरप्याशाकुलितं जठरं किं नहि मुञ्चसि कथयेश्चित्तम्। भज० ॥३॥

मायाकल्पितमैन्द्रं जालं न हि तत्सत्यं दृष्टिविकारम्।
प्राते तत्त्वे सर्वमसारं मा कुरु मा कुरु विषयविचारम्। भज० ॥४॥

रज्जौ सर्पभ्रमणारोपस्तद्वद्ब्रह्मणि जगदारोपः।
मिथ्यामायामोहविकारं मनसि विचारय बारम्बारम्। भज० ॥५॥

अध्वरकोटीगङ्गागमनं कुरुते योगं चेन्द्रियदमनम्।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन न भवति मुक्तो जन्मशतेन। भज० ॥६॥

सोऽहं हंसो ब्रह्मैवाहं शुद्धानन्दस्तत्त्वपरोऽहम्।
अद्वैतोऽहं सङ्गविहीने चेन्द्रिय आत्मनि निखिले लीने। भज० ॥७॥

शङ्करकिङ्कर मा कुरु चिन्तां चिन्तामणिना विरचितमेतत्।
यः सद्भक्त्या पठति हि नित्यं ब्रह्मणि लीनो भवति हि सत्यम्। भज० ॥८॥

इति श्रीचिन्तामणिविरचितं गौरीशाष्टकं सम्पूर्णम्।

www.drcmraina.com

जयशंभुनाथ, दिगंबरम्

जयशंभुनाथ, दिगंबरम्। करुणाकरं जगदीश्वरम्।।
भवतारणम् भयहारणम्। करुणाकरंजगदीश्वरम्।।
मृगछाल अंग सुशोभितम्। करमाल दण्ड बिराजितम्।।
यमकाल पाशबिमोचकम्। करुणाकरं जगदीश्वरम्।।
जय शंभुनाथ दिगंबरम्। करुणाकरम् जगदीश्वम्।।
भवतारणम् भयहारणम्। करुणाकरं जगदीश्वरम्।।
गलरुण्डमाल कपालब्याल। तनभस्म शोभित सुंदरम्।।
तवशक्ति अंग सुशोभितम्। करुणाकरं जगदीश्वरम्।।
जय शंभुनाथ दिगंबरम्। करुणाकरं जगदीश्वरम्।।
भवतारणं भयहारणम्। करूणाकरं जगदीश्वरम्।।
हे दक्षयज्ञ बिनाशकम्। हे कामदाहन कारणम्।।
श्री गणेशस्कंद नमस्कृतम्। करुणाकरं जगदीश्वरम्।।
जय शंभुनाथ दिगंबरम्। करुणाकरं जगदीश्वरम्।।
भवतारणं भयहारणम्। करूणाकरं जगदीश्वरम्।।
आशुतोष शशांक शेखर चन्द्रमौलिमृत्युञ्जयम्।।
तवपादकमल नमाम्यहं। करूणाकरं जगदीश्वरम्।।
जय शंभुनाथ दिगंबरम्। करूणाकरं जगदीश्वरम्।।
भवतारणं भयहारणम्। करूणाकरं जगदीश्वरम्।।

www.drcmraina.com

प्रभु महादेव के अर्द्धनारीश्वर स्वरूप का कारण.. शिवभक्त- 'भृंगी'

जब भी भगवान शिव के गणों की बात होती है तो उनमें नंदी, भृंगी, श्रृंगी इत्यादि का वर्णन आता ही है। हिन्दू धर्म में नंदी एक बहुत ही प्रसिद्ध शिवगण हैं जिनके बारे में हमारे ग्रंथों में बहुत कुछ लिखा गया है।

नंदी की भांति ही भृंगी भी शिव के महान गण और तपस्वी भक्त हैं किन्तु दुर्भाग्यवश उनके बारे में हमें अधिक जानकारी नहीं मिलती है। भृंगी को तीन पैरों वाला गण कहा गया है। कवि तुलसीदास जी ने भगवान शिव का वर्णन करते हुए भृंगी के बारे में लिखा है- **"बिनुपद होए कोई बहुपद बाहु।।"**

अर्थात: शिवगणों में कोई बिना पैरों के तो कोई कई पैरों वाले थे। यहाँ कई पैरों वाले से तुलसीदास जी का अर्थ भृंगी से ही है।

पुराणों में उन्हें एक महान ऋषि के रूप में दर्शाया गया है जिनके तीन पाँव हैं। शिवपुराण में भी भृंगी को शिवगण से पहले एक ऋषि और भगवान शिव के अनन्य भक्त के रूप में दर्शाया गया है। भृंगी को पुराणों में अपने धुन का पक्का बताया गया है।

भगवान शिव में उनकी लगन इतनी अधिक थी कि अपनी उस भक्ति में उन्होंने स्वयं शिव-पार्वती से भी आगे निकलने का प्रयास कर डाला। भृंगी का निवास स्थान पहले पृथ्वी पर बताया जाता था।

www.drcmraina.com

उन्होंने भी नंदी की भांति भगवान शिव की घोर तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर महादेव ने उसे दर्शन दिए और वर मांगने को कहा। तब भृंगी ने उनसे वर माँगा कि वे जब भी चाहें उन्हें महादेव का सानिध्य प्राप्त हो सके।

ऐसा सुनकर महादेव ने उसे वरदान दिया कि वो जब भी चाहे कैलाश पर आ सकते हैं। उस वरदान को पाने के बाद भृंगी ने कैलाश को ही अपना निवास स्थान बना लिया और वही भगवान शिव के सानिध्य में रहकर उनकी आराधना करने लगा।

भक्त कई प्रकार के होते हैं किन्तु उनमें से जो सबसे दृढ होता है उसे 'जड़ भगत' कहते हैं। जड़ भगत का अर्थ ऐसे भक्त से होता है जिसे अपनी भक्ति के आगे कुछ और नहीं सूझता। ऐसे भक्त अपनी अति भक्ति के कारण कई बार हित-अहित का विचार भी भूल जाते हैं जिससे अंतत: उनका ही अनिष्ट होता है। कहा गया है कि **'अति सर्वत्र वर्जयेत्'**। अर्थात किसी भी चीज की अति नहीं करनी चाहिए।

भृंगी की भक्ति भी इसी जड़-भक्ति की श्रेणी में आती थी। वे महादेव के भक्त तो थे किन्तु भगवान शिव में उनका अनुराग इतना अधिक था कि उनके समक्ष उन्हें कुछ दिखता ही नहीं था। यही नहीं, जिस माँ पार्वती की पूजा पूरा जगत करता है और जो जगतमाता हैं, भगवान शिव के आगे भृंगी स्वयं उन्हें भी भूल जाते थे।

ऐसा विधान है कि भगवान शिव की पूजा माता पार्वती की पूजा के बिना अधूरी मानी जाती है। यही कारण है कि विश्व के सभी महान ऋषि जब भी भगवान शिव की पूजा करते हैं तो वे माता की पूजा भी अवश्य करते हैं। ये इस बात का द्योतक है कि शिव और

www.drcmraina.com

शक्ति कोई अलग अलग नहीं हैं अपितु दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इसीलिए शिव की पूजा से शक्ति और शक्ति की पूजा से शिव स्वतः ही प्रसन्न हो जाते हैं।

किन्तु भृंगी की भक्ति अलग ही श्रेणी की थी। पूरे विश्व में केवल वही एक ऋषि थे जो सदैव केवल शिव की ही पूजा किया करते थे और माता पार्वती की पूजा नहीं करते थे। नंदी आदि शिवगणों ने उन्हें कई बार समझाया कि केवल शिवजी की पूजा नहीं करनी चाहिए किन्तु उनकी भक्ति में डूबे भृंगी को ये बात समझ में नहीं आयी। स्थिति यहाँ तक पहुंच गयी कि एक दिन भृंगी ने स्वयं शिव एवं शक्ति को अलग करना चाहा। अब ऐसे दुःसाहस का परिणाम तो बुरा होना ही था।

परिणाम ये हुआ कि भृंगी को माता पार्वती के श्राप का भाजन बनना पड़ा। किन्तु उनका ये श्राप भी विश्व के लिए कल्याणकारी ही सिद्ध हुआ क्यूंकि भृंगी के कारण ही पूरे विश्व को भगवान शिव और माता पार्वती के दुर्लभ अर्धनारीश्वर रूप के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

एक बार भृंगी सदा की भांति महादेव की आराधना करने कैलाश पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि महादेव की बाई ओर उनकी माता पार्वती विराजमान थी। भगवान शिव समाधि रत थे किन्तु माता चैतन्य थीं। भृंगी ने अपनी पूजा आरम्भ की और अपने समक्ष माता पार्वती के होने के बाद भी उन्होंने केवल महादेव की ही पूजा की। माता को इस बात की जानकारी हो गयी किन्तु उन्होंने भृंगी से कुछ कहा नहीं। वे प्रसन्न थी कि कोई उनके स्वामी का इतना बड़ा भक्त है।

www.drcmraina.com

पूजा समाप्त करने के बाद भृंगी ने महादेव की परिक्रमा करनी चाही। वे ब्रह्मचारी थे और केवल भगवान शिव की परिक्रमा करना चाहते थे किन्तु आधी परिक्रमा करने के बाद वे रुक गए क्यूंकि महादेव के वाम अंग पर तो माता विराजमान थी।

शिव की भक्ति में डूबे भृंगी ने माता से अनुरोध किया कि वे कुछ समय के लिए महादेव से अलग हो जाएँ ताकि वे अपनी परिक्रमा पूरी कर सके। अब माता को भृंगी की अज्ञानता का बोध हुआ। उन्होंने हँसते हुए कहा कि ये मेरे पति हैं और मैं किसी भी स्थिति में इनसे अलग नहीं हो सकती।

भृंगी ने उनसे बहुत अनुरोध किया किन्तु माता शिव की गोद से हटने को तैयार नहीं हुई। भृंगी अपने हठ पर अड़े थे। भक्ति ने कब मूढ़ता का रूप ले लिया उन्हें पता नहीं चला। उन्होंने एक सर्प का रूप धारण कर लिया और परिक्रमा पूरी करने के लिए महादेव और महादेवी के बीच से निकलने का प्रयत्न करने लगे। उसके इस कृत्य से महादेव की समाधि भंग हो गयी।

जब शिव ने भृंगी को ऐसा करते हुए देखा तो वे समझ गए कि भृंगी अज्ञानता में डूबे हैं। तब उनकी अज्ञानता दूर करने के लिए महादेव ने तत्काल महादेवी को स्वयं में विलीन कर लिया।

उनका ये रूप ही प्रसिद्ध अर्धनारीश्वर रूप कहलाया जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ था। उनका ये रूप देखने के लिए देवता तो देवता, स्वयं भगवान ब्रह्मा और नारायण वहाँ उपस्थित हो गए। सबको लगा कि अब भृंगी को सत्य का ज्ञान हो जाएगा किन्तु कदाचित उनकी भक्ति सारी सीमाओं को पार कर चुकी थी।

www.drcmraina.com

उन्होंने भगवान शिव की परिक्रमा करने के लिए एक भयानक दु:साहस किया। उन्होंने एक चूहे का रूप धरा और अर्धनारीश्वर रूप को कुतर कर महादेव को महादेवी से अलग करने का प्रयास करने लगे।

अब तो ये अति थी। भृंगी महादेव का भक्त था इसीलिए वे तो चुप रहे किन्तु ऐसी धृष्टता देखकर माता पार्वती का धैर्य टूट गया। उन्होंने क्रोधपूर्वक कहा– "रे मुर्ख! इस अर्धनारीश्वर रूप को देखकर भी तू ये ना समझा कि शिव और शक्ति एक ही हैं। यदि तेरी दृष्टि में स्त्री शक्ति का कोई सम्मान नहीं है तो अभी तेरे शरीर से तेरी माता का अंश अलग हो जाये।"

सृष्टि के नियम के अनुसार मनुष्य को हड्डी और पेशियाँ पिता से मिलती हैं और रक्त और मांस माता से। माता पार्वती के श्राप देते ही भृंगी के शरीर से रक्त और मांस अलग हो गया। अब वो केवल हड्डियों और मांसपेशियों का एक ढांचा भर रह गया। मृत्यु उसकी हो नहीं सकती थी क्यूंकि महाकाल के पास काल कैसे आता? अब असहनीय पीड़ा सहते हुए भृंगी को अंतत: ये ज्ञान हुआ कि पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं।

उसने उसी दयनीय स्थिति में माता पार्वती से क्षमा याचना की दोनों की पूजा और परिक्रमा की। तब महादेव के अनुरोध पर माता पार्वती अपना श्राप वापस लेने को तैयार हुईं। किन्तु धन्य हो भृंगी जिसने माता को ऐसा करने से रोक दिया।

उसने कहा कि – "हे माता! आप कृपया मुझे ऐसा ही रहने दें ताकि मुझे देखकर पूरे विश्व को ये ज्ञान होता रहे कि शिव और

www.drcmraina.com

शक्ति एक ही है और नारी के बिना पुरुष पूर्ण नहीं हो सकता।"

उसकी इस बात से दोनों बड़े प्रसन्न हुए और महादेव ने उसे वरदान दिया कि वो सदैव उनके साथ ही रहेगा। साथ ही भगवान शिव ने कहा कि चूँकि भृंगी उनकी आधी परिक्रमा ही कर पाया था इसीलिए आज से उनकी आधी परिक्रमा का ही विधान होगा। यही कारण है कि महादेव ही केवल ऐसे हैं जिनकी आधी परिक्रमा की जाती है।

भृंगी चलने फिरने में समर्थ हो सके इसीलिए भगवान शिव ने उसे तीसरा पैर भी प्रदान किया जिससे वो अपना भार संभाल कर शिव-पार्वती के साथ चल सके। भृंगी को तो ऐसा सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसके लिए स्वयं देवता भी तरसते हैं।

शिव का अर्धनारीश्वर रूप विश्व को ये शिक्षा प्रदान करता है कि पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं। शक्ति के बिना तो शिव भी शव के समान हैं। अर्धनारीश्वर रूप में माता पार्वती का वाम अंग में होना ये दर्शाता है कि पुरुष और स्त्री में स्त्री सदैव पुरुष से पहले आती है और इसी कारण माता का महत्त्व पिता से अधिक बताया गया है।

www.drcmraina.com

श्रीशिवकृत श्रीराम-स्तुति

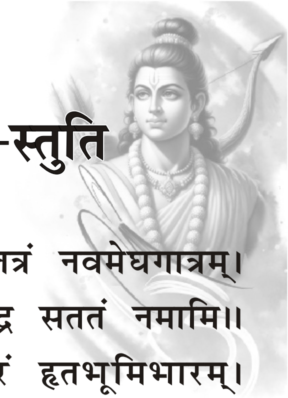

सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं सीताकलत्रं नवमेघगात्रम्।
कारुण्यपात्रं शतपत्रनेत्रं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि॥
संसारसारं धर्मावतारं निगमप्रचारं हृतभूमिभारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धुसारं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि॥
लक्ष्मीविलासं जगतां निवास लङ्काविनाशं भुवनप्रकाशम्।
भूदेववासं शरदिन्दुहासं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि॥
मन्दारमालं वचने रसालं गुणैर्विशालं हतसप्ततालम्।
क्रव्यादकालं सुरलोकपालं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि॥
वेदान्तगानं सकलैः समानं हतारिमानं त्रिदशप्रधानम्।
गजेन्द्रयानं विगतावसानं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि॥
श्यामाभिरामं नयनाभिरामं गुणाभिरामं वचनाभिरामम्।
विश्वप्रणामं कृतभक्तकामं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि॥
लीलाशरीरं रणरङ्गधीरं विश्वैकसारं रघुवंशहारम्।
गम्भीरनादं जितसर्ववादं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि॥
खले कृतान्तं स्वजने विनीतं सामोपगीतं मनसाप्रतीतम्।
रागेण गीतं वचनादतीतं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि॥

श्रीशिवजी बोले– सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति, नवीन मेघ के समान शरीर वाले, करुणा के सिन्धु और कमल के सदृश नेत्र वाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ। असार संसार में एकमात्र सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के साक्षात् अवतार, भूभार का

www.drcmraina.com

हरण करने वाले, सदा अविकृत रहने वाले और आनन्दसिन्धु के सारभूत श्रीरामचन्द्र को मैं सदा नमस्कार करता हूँ। लक्ष्मी के साथ विलास करने वाले, जगत् के निवास स्थान, लंका का विनाश करने वाले, भुवनों को प्रकाशित करने वाले, ब्राह्मणों को शरण देने वाले और शारदीय चन्द्रमा के समान शुभ्र हास्य से विभूषित श्रीरामचन्द्र को मैं सतत नमन करता हूँ। [दिव्य] मन्दारपुष्पों की माला धारण करने वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान्, सात ताल वृक्षों का (एक साथ) भेदन करने वाले, राक्षसों के काल तथा देवलोक के पालक श्रीरामचन्द्र को मैं नमस्कार करता हूँ। वेदान्त (उपनिषदों) द्वारा गेय, सब के साथ समान बर्ताव करने वाले, शत्रु के मान का मर्दन करने वाले, गजेन्द्र की सवारी करने वाले तथा अन्तरहित देव-शिरोमणि श्रीरामचन्द्र को मैं सतत नमस्कार करता हूँ। श्यामसुन्दर, नयनों को आनन्द देने वाले, गुणों से मनोहर, हृदयग्राही वचन बोलने वाले, विश्ववन्दनीय और भक्तजनों की कामनाओं को पूरा करने वाले श्रीरामचन्द्र को मैं निरन्तर प्रणाम करता हूँ। लीला मात्र के लिये शरीर धारण करने वाले, रणस्थली में धीर, विश्वभर में एकमात्र सारभूत, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीर वाणी बोलने वाले और समस्त वादों को जीतने वाले श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ। दुष्टजनों के लिये मृत्युरूप, अपने परिजनों के प्रति नम्र भाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मनके भी अगोचर, प्रेम से गान करने योग्य तथा वचनों से अतीत श्रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ। [आनन्दरामायण, सारकाण्ड १२। ११६ ख १२३]

www.drcmraina.com

श्री कुम्भोदर मुनि द्वारा विरचित श्रीराम अष्टोत्तर शत नाम

विनियोग

ॐ अस्य श्रीरामचन्द्रनामाष्टोत्तरशतमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। जानकीवल्लभः श्रीरामचन्द्रो देवता। ॐ बीजम्। नमः शक्तिः। श्रीरामचन्द्रः कीलकम्। श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

श्रीरामचन्द्रजी के इस अष्टोत्तरशतनाम–स्तोत्रमन्त्र के ब्रह्मा ऋषि हैं, इसका छन्द अनुष्टुप् है, इस स्तोत्र के देवता जानकीवल्लभ श्रीरामचन्द्र हैं। **ॐ** इसका बीज है, **नमः** शक्ति है, श्रीरामचन्द्रजी द्वारा इसका कीलन किया गया है और भगवान् श्रीरामचन्द्रजी की प्रसन्नता के लिये जपमें इसका विनियोग है।

हृदयादिषडङ्गन्यास– ॐ नमो भगवते राजाधिराजाय परमात्मने हृदयाय नमः – ऐसा कहकर दायें हाथ से हृदय का स्पर्श करे।

ॐ नमो भगवते विद्याधिराजाय हयग्रीवाय शिरसे स्वाहा– ऐसा कहकर दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से सिर का स्पर्श करे।

ॐ नमो भगवते जानकीवल्लभाय नमः शिखायै वषट्– ऐसा कहकर दाहिने हाथ के अँगूठे से शिखा का स्पर्श करे।

ॐ नमो भगवते रघुनंदनायामिततेजसे कवचाय हुम्– ऐसा कहकर दाहिने हाथ से बायें बाहुका और बायें हाथ से दाहिने बाहुका स्पर्श करे।

ॐ नमो भगवते क्षीराब्धिमध्यस्थाय नारायणाय नेत्रत्रयाय वौषट्– ऐसा कहकर दायें हाथ की अनामिका अँगुली से बायें नेत्र का, तर्जनी

www.drcmraina.com

अँगुली से दाहिने नेत्र का और मध्यमा अँगुली से दोनों भौंहों के बीच में स्थित तीसरे नेत्र का एक साथ ही स्पर्श करे।

ॐ नमो भगवते सत्प्रकाशाय रामाय अस्त्राय फट्– ऐसा कहकर दाहिने हाथ को सिर के पीछे से घुमाते हुए दाहिने हाथ की तर्जनी तथा मध्यमा से बायें हाथ की हथेली पर चोट करे।

इस प्रकार से शरीर के हृदय आदि छः अंगों में भगवान् को विराजित करे। तदनन्तर इसी क्रम से पाँचों अँगुलियों तथा दोनों करतलों में न्यास करे।

न्यास के अनन्तर भगवान् श्रीराम का इस प्रकार से ध्यान करे–

मन्दाराकृतिपुण्यधामविलसद्वक्षःस्थलं कोमलं
शान्तं कान्तमहेन्द्रनीलरुचिराभासं सहस्राननम्।
वन्देऽहं रघुनन्दनं सुरपतिं कोदण्डदीक्षागुरुं
रामं सर्वजगत्सुसेवितपदं सीतामनोवल्लभम्॥

जिनकी आकृति अत्यन्त सुन्दर है, जो पुण्य के धाम हैं, जिनका वक्षः स्थल कौस्तुभ तथा चिन्तामणि आदि मणियों तथा मुक्ता आदि की मालाओं से अत्यन्त सुशोभित हो रहा है। जो अत्यन्त कोमल हैं, जिनका स्वभाव बहुत ही शान्त है, कमनीय महेन्द्रनीलमणि की आभा के समान जिनके शरीर की श्यामल आभा है, विराट् पुरुष रूप में जिनके अनेकानेक मुख हैं, जो देवताओं के स्वामी एवं धनुर्वेद की दीक्षा देने वाले गुरु हैं, समस्त जगत् जिनके चरणों की सदा सेवा किया करता है और जो सीता के मनको अत्यन्त प्रिय लगने वाले हैं, उनके प्राणवल्लभ हैं, उन रघुवंश को आनन्दित करने वाले भगवान् श्रीराम की मैं वन्दना करता हूँ।

www.drcmraina.com

स्तोत्र-

सहस्रशीर्ष्णे वै तुभ्यं सहस्राक्षाय ते नमः।
नमः सहस्रहस्ताय सहस्रचरणाय च॥
नमो जीमूतवर्णाय नमस्ते विश्वतोमुख।
अच्युताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शेषशायिने॥
नमो हिरण्यगर्भाय पंचभूतात्मने नमः।
नमो मूलप्रकृतये देवानां हितकारिणे॥
नमस्ते सर्वलोकेश सर्वदुःखनिषूदन।
शंखचक्रगदापद्मजटामुकुटधारिणे॥
नमो गर्भाय तत्त्वाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः।
ॐ नमो वासुदेवाय नमो दशरथात्मज॥
नमो नमस्ते राजेन्द्र सर्वसम्पत्प्रदाय च।
नमः कारुण्यरूपाय कैकेयीप्रियकारिणे॥
नमो दांताय शांताय विश्वामित्रप्रियाय ते।
यज्ञेशाय नमस्तुभ्यं नमस्ते क्रतुपालक॥
नमो नमः केशवाय नमो नाथाय शार्ङ्गिणे।
नमस्ते रामचन्द्राय नमो नारायणाय च॥
नमस्ते रामचन्द्राय माधवाय नमो नमः।
गोविन्दाय नमस्तुभ्यं नमस्ते परमात्मने॥
नमस्ते विष्णुरूपाय रघुनाथाय ते नमः।
नमस्तेऽनाथनाथाय नमस्ते मधुसूदन॥

www.drcmraina.com

त्रिविक्रम नमस्तेऽस्तु सीतायाः पतये नमः।
वामनाय नमस्तुभ्यं नमस्ते राघवाय च।।
नमो नमः श्रीधराय जानकीवल्लभाय च।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश कंदर्पाय नमो नमः।।
नमस्ते पद्मनाभाय कौसल्याहर्षकारिणे।
नमो राजीवनयन नमस्ते लक्ष्मणाग्रज।।
नमो नमस्ते काकुत्स्थ नमो दामोदराय च।
विभीषणपरित्रातर्नमः संकर्षणाय च।।
वासुदेव नमस्तेऽस्तु नमस्ते शंकरप्रिय।
प्रद्युम्नाय नमस्तुभ्यमनिरुद्धाय ते नमः।।
सदसद्भक्तिरूपाय नमस्ते पुरुषोत्तम।
अधोक्षज नमस्तेऽस्तु सप्ततालहराय च।।
खरदूषणसंहर्त्रे श्रीनृसिंहाय ते नमः।
अच्युताय नमस्तुभ्यं नमस्ते सेतुबन्धक।।
जनार्दन नमस्तेऽस्तु नमो हनुमदाश्रय।
उपेन्द्रचन्द्रवंद्याय मारीचमथनाय च।।
नमो बालिप्रहरण नमः सुग्रीवराज्यद।
जामदग्न्यमहादर्पहराय हरये नमः।।
नमो नमस्ते कृष्णाय नमस्ते भरताग्रज।
नमस्ते पितृभक्ताय नमः शत्रुघ्नपूर्वज।।

www.drcmraina.com

अयोध्याधिपते तुभ्यं नमः शत्रुघ्नसेवित।
नमो नित्याय सत्याय बुद्ध्यादिज्ञानरूपिणे।।

अद्वैतब्रह्मरूपाय ज्ञानगम्याय ते नमः।
नमः पूर्णाय रम्याय माधवाय चिदात्मने।।

अयोध्येशाय श्रेष्ठाय चिन्मात्राय परात्मने।
नमोऽहल्योद्धारणाय नमस्ते चापभञ्जिने।।

सीतारामाय सेव्याय स्तुत्याय परमेष्ठिने।
नमस्ते बाणहस्ताय नमः कोदण्डधारिणे।।

नमः कबन्धहन्त्रे च वालिहन्त्रे नमोऽस्तु ते।
नमस्तेऽस्तु दशग्रीवप्राणसंहारकारिणे।।

भगवान् श्रीराम के इस उत्तम अष्टोत्तर-शतनामस्तोत्र को मैंने तुम्हें बताया। यह अत्यन्त पावन है और सभी प्रकार के पापों का विनाश करने वाला है।

www.drcmraina.com

आरती श्री गंगा जी की

ॐ जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥
ॐ जय गंगे माता ......

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता॥
ॐ जय गंगे माता ......

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता॥
ॐ जय गंगे माता ......

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता॥
ॐ जय गंगे माता ......

आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता॥
ॐ जय गंगे माता ......

www.drcmraina.com

आशीर्वाद प्राप्ति

साधुसन्तों की भूमि भारतवर्ष महान है। आशीर्वाद दिया नहीं जाता लिया जाता है, यदि अपने पास विवेकयुक्त बुद्धिबल, ईश्वर के प्रति भावामृत हृदय हो तो कोई भी कार्य सफल हो जाता है। ईश्वर के घर में देर है अन्धेर नहीं। क्या सन्तों का आशीर्वाद मिलता है? हाँ मिलता है ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं अपने जन्म सम्बन्धी गाथा को आप सब के साथ साँझा कर रहा हूँ, मेरा जन्म विक्रमी संवत् 2009 माघ शुक्ल पञ्चमी मंगलवार **वसन्त पञ्चमी** तदनुसार 20 जनवरी 1953 में तहसील, जिला रियासी शिवखोड़ी धाम, गाँव पौराकोटला में हुआ। मेरा जन्म मेरे माता पिता के विवाह होने के 16 वर्ष बाद हुआ, हमारा परिवार कश्मीर से औरंगजेब के कार्यकाल में आतंक के भय से अखनूर में आकर वस गया। कुछ दूसरे परिवार हमारे पराशर गोत्रीय ब्राह्मण जम्मू, जन्दराह, उधमपुर, सूञ्जवां आदि गाँवों में वस गये। मेरे दादा श्री पं. मेला राम रैणा जी ज्योतिष और कर्मकाण्ड के उच्चकोटि के विद्वान थे। उनके छोटे भाई पं. प्रकाश राम रैणा जी आयुर्वेदाचार्य एक प्रसिद्ध हकीम थे। दोनों भाईयों का राजपरिवारों में आना जाना होता रहता था, परिवार एक प्रसिद्ध परिवार था। गढ़ सोहल जागीर के जितने भी जम्वाल राजपूत हैं सभी हमारे शिष्य हैं, मुझे आज भी स्मरण है हमारे अन्न भण्डार सदैव भरे रहते थे। चार, पाँच गौमाताएँ घर में रहती थीं। मेरे दादा जी गौ माता की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे और प्रतिदिन

www.drcmraina.com

पार्थिव शिवलिंग पूजन तथा शालिग्राम पूजन करते थे, किन्तु वंशवृद्धि न होने के कारण चिन्तित रहते थे उनका दृढ़ विश्वास था कि वंश अवश्य चलेगा।

उधर पौराकोटला में मेरे नानी नाना भी अपने बेटी के लिए चिन्तित रहते थे। मेरे नाना जी का बहुत बड़ा व्यापार, जम्मू तक उनकी खच्चरों पर सामान भेजा जाता। अनारदाना, गुच्छी, देसी घी इत्यादि जम्मू भेजा जाता उसके बदले में मनयारी, कपड़ा इत्यादि पौराकोटला आता था। मेरे तीन मामें भी व्यापार में सहयोग करते थे, पशुओं का पोषणादि की व्यवस्था देखते थे।

पास के गाँव से एक दिन गुज्जर, बकरवालों का समुदाय नाना जी को मिलने आया। उन्होंने कहा, "शाह जी पिछले प्रहर में (ब्रह्ममुहूर्त में) एक भूत आता है हमारे कुत्ते भौंकते हैं, आगे जाते हैं तो चुप हो जाते हैं, हम सभी भयभीत हैं, कुछ उपाय करें ताकि हमें भय से छुटकारा मिले।" नाना जी ने उन सभी को उत्तर देते हुए कहा, "तुम लोग मूर्ख हो, कोई भूत नहीं आता, जरूर कोई साधु महात्मा होंगे जो बावली पर प्रातः स्नान करने आते हैं, तुम लोग डरो नहीं कल उनका पता करता हूँ।" ऐसा कहकर उन सभी को आश्वासन दिया।

यह गाथा मैंने अपने दादा जी, पिता जी तथा नानी जी से सुनी है, दूसरे दिन नाना जी ने दिन भर खोज की परन्तु किसी साधु महात्मा को नहीं पाया, निराश होकर सन्ध्याकाल घर आ गए। नानी जी को सारा वृत्तान्त सुनाया। नानी जी ने नाना जी को कहा, "क्या आपने शिवखोड़ी गुफा के अन्दर देखा।" नाना जी ने न में सिर हिलाया और कहा, "मैं कल फिर जाऊँगा और पता करूंगा।" नाना जी दूसरे दिन

www.drcmraina.com

शिवखोड़ी गुफा में पहुँचे, चीड़ की लकड़ी जला कर गुफा के भीतर प्रवेश किया, भगवान शिव परिवार के दर्शन किए तत्पश्चात् जोर–जोर से पुकारा, "कोई साधु महात्मा हैं तो दर्शन दें।" किसी ने दर्शन नहीं दिए। नाना जी निराश होकर वापिस घर आ गये। नानी जी को सुनाया, "मुझे कोई नहीं मिला।" नानी जी बोलीं, "मुझे विश्वास हो रहा है, कोई–न–कोई बावा तपस्या कर रहे होंगे, कल मैं आपके साथ चलूँगी।" दूसरे दिन नाना–नानी जी दोनों गुफा में पहुँचे पुनः आवाज़ें दीं तो पूज्य ब्रह्मर्षि बावा–दूधाधारी जी ने उनको दर्शन दिए, नाना जी ने प्रार्थनापूर्वक उनको अपना परिचय देते हुए कहा, "महाराज जी मैं दुन्नीचन्द मंगोत्रा, यह मेरी पत्नी श्रीमती भगवती देवी हैं, हम यहाँ पास गाँव पौरा कोटला के रहने वाले हैं। हमारा देसी घी, गुच्छियों, अनारदाने के व्यापार है और मैं यहाँ गाँव में मुखिया भी हूँ।" पूज्य महाराज जी को नम्र निवेदन किया कि हमें आप सेवा के लिए निर्देश करें। महाराज जी ने कहा, "मुझे सेवा की आवश्यकता नहीं, आप अपने घर जाओ।" नानी नाना जी ने बार–बार प्रार्थना की तो महाराज जी ने पूछा, "तुम्हारे घर में गौमाता की सेवा होती है, कितनी गौ माताएं आपके पास हैं।" नाना जी ने कहा, "महाराज जी हमारे पास पाँच गौमाताएं हैं, भैसें भी हैं। दूध, दही, घी इत्यादि की कोई कमी नहीं है।" महाराज जी ने पूछा, "काली गाय भी है।" नानी जी बोले, "हाँ महाराज, है।" तब महाराज जी बोले, "तुम ऐसा करो दो गड़वे (लोटे) ले लो, एक भरा हुआ छोड़ जाना, दूसरा खाली ले जाना, परन्तु एक शर्त है तुम ये काम निरन्तर करते जाओगे पर मुझे बुलाओगे नहीं, मैं स्वयं तुम्हें बुला लूँगा।" ऐसा करते लगभग छः मास तक

www.drcmraina.com

चलता रहा, महाराज जी ने नाना जी को नहीं बुलाया। अचानक एक दिन नाना जी दूध का गड़बा (लोटा) छोड़ रहे थे तो महाराज जी की मधुर ध्वनि सुनाई दी– "हे दुनिचन्द बात सुनो।" नाना जी विनम्रभाव से प्रणाम करके उनके पास पहुँचे। महाराज जी बोले, "देखो दुनिचन्द तुमने मेरी बड़ी श्रद्धा से सेवा की है, एक काम करना है अपनी बेटी शान्ति (छान्नो) को अपने पास ले आओ उसको बेटा होगा और अपने सम्बन्धी जी को बोलना बावा जी को यज्ञ करवाना है, नाना जी की खुशी का ठिकाना नहीं था। प्रसन्नतापूर्वक घर पहुँचते ही नानी जी को सारा समाचार सुनाया। दूसरे दिन नाना जी अपने विशेष घोड़ों की सहायता से पाँबला गाँव पहुंचे। उनके साथ उनके दो नौकर भी थे, खाने पीने की व्यवस्था नौकर ही करते थे, क्योंकि बेटी के घर नाना जी को अन्न ग्रहण नहीं करना था। शाम हो गई तो पाँबला में रात को रुक गए। प्रातःकाल नौकरों को कहा, "तुम दोनों सामान सहित घोड़ों को टांडा गाँव (उनके मित्र का घर था) मैं मित्र का नाम नहीं जानता, नौकर टांडा की तरफ चल पड़े।

नाना जी दूसरे दिन बस पर बैठकर टांडा पहुंचे, तीसरे दिन सब लोग अखनूर हमारे घर पहुंचे, नाना जी का अखनूर पहुंचने का पूर्व समाचार नहीं था। मेरे दादा जी ने उनका स्वागत किया। उनके ठहरने की व्यवस्था भी की, तत्पश्चात् दादा जी ने नाना जी को अचानक आने पर विशेष कारण क्या है? यह पूछा तो नाना जी ने पूज्य महाराज जी का परिचय देते हुए सारी कहानी सुनाई और कहा, "छान्नो को पौरा कोटला ले जाना है, बच्चा वहीं पर होगा, ऐसा बावा जी का आदेश है।" दादा जी ने मना कर दिया परन्तु बहुत तर्कवितर्क होने पर

www.drcmraina.com

निश्चय हो गया कि छान्नो पौरा कोटला जाएगी। यात्रा के प्रबन्ध किए गये। उन दिनों एक बस जम्मू से पुन्छ जाती थी वही बस पाँच दिनों में वापिस जम्मू आती थी। जैसे कैसे व्यवस्था करके सब लोग पाँबला में पहुँचे। पाँबला में पालकी की व्यवस्था की गई। माता जी सुरक्षित पौरा कोटला पहुँच गई। अभी प्रसव में समय था। नाना जी यथावत पूज्य महाराज जी की सेवा में कार्यरत रहे, यज्ञ की तैयारियाँ हो रहीं थी। मेरे दादा जी निर्धारित तिथि अनुसार अपने विद्वान पण्डितों सहित शिवखोड़ी धाम पर पहुँचे। उनमें मेरे पिता पं. रामेश्वर दत्त रैणा जी भी शामिल थे। जैसे ही पूज्य दादा जी ने गुफा में प्रवेश किया तो महाराज जी का उच्च स्वर सुनाई दिया– "पण्डित मेला राम जी आप राजाओं को यज्ञ करवाते हो, राजपूतों के गुरु हो, अब बावा को यज्ञ करवाना है।" तो दादा जी ने कहा, "महाराज जी आपने जो बचन कहे हैं सत्य हुए तो मेरे सहित समस्त परिवार आपका शिष्य बनेगा और जब तक मेरा परिवार चलेगा आपका सेवक बना रहेगा।" यज्ञ प्रारम्भ हुआ, सारी व्यवस्था के प्रमुख मेरे नाना-नानी जी थे, बहुत बड़ा यज्ञ हुआ। ऐसा विधिपूर्वक यज्ञ विधान प्रान्तीय लोगों ने नहीं देखा था। प्रचुर मात्रा में लोग आ-जा रहे थे। लोगों ने भरपूर उत्साह बना हुआ था। पूर्णाहुति विक्रमी संवत् 2009 माघ शुक्ल पञ्चमी को होना निश्चित था। समयानुसार पूर्णाहुति हो गई, तत्पश्चात ब्राह्मणों को दक्षिणादि का क्रम हुआ। भण्डारा भी साथ ही चल रहा था। लोग भण्डारा प्रसाद पाकर आनन्दित हो रहे थे। मालपुए खीर इत्यादि का प्रचुर प्रबन्ध था। शाम को प्रसन्नता में बैठकर पूज्य महाराज जी ने एक थाली में कुछ मालपुए डालकर नाना जी को

www.drcmraina.com

प्रसाद रूप में दिए और कहा ये मालपुए शान्ति पुत्र को खाने को देना ध्यान रखना वो कितने पुए खाती है। माता जी ने मुझे स्वयं बताया था, बेटा मैंने तीन पुए खाए तो मुझे तकलीफ होना शुरू हो गई, रात को तेरा जन्म हो गया। बाहर बर्फ भी गिर रही थी बारिश भी हो रही थी। दूसरे दिन नाना जी यह समाचार लेकर पूज्य महाराज जी के पास पहुंचे। महाराज जी ने पूछा, "छान्नो ने कितना पूड़ा खाया।" नाना जी ने बताया, "महाराज तीन खा पाई फिर तकलीफ होना शुरू हो गई, एक घण्टे बाद बच्चे का जन्म हो गया, दोनों ठीकठाक हैं।" महाराज जी बोले, "यह चन्द्रमौलि आ गया, दूसरा शिव प्रसाद, तीसरा त्रिलोक नाथ होगा।" बावा ने तो पुए अधिक दिये थे वो तो तीन ही खा सकी, तीन पुत्र होंगे। आशीर्वाद मिल गया, आज हम तीन ही भाई हैं और हमारा परिवार आश्रम सेवा में है। ब्रह्मर्षि बावा दूधाधारी महाराज जी की जय, सन्त शिरोमणि श्री प्रभुदास जी महाराज जी की जय।

www.drcmraina.com

सम्पादक परिचय

नाम : डॉ. चन्द्रमौलि रैणा

माता / पिता : श्रीमती शान्ति देवी, पं. रामेश्वर दत्त रैणा

जन्म स्थान : पौराकोटला (शिवखोड़ी धाम), जिला रियासी (जम्मू कश्मीर)

शिक्षा : शास्त्री, फलितज्योतिषाचार्य, सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (पीएच.डी.)

भाषाज्ञान : संस्कृत, हिन्दी, इंग्लिश, डोगरी एवं पंजाबी

सेवावृत्ति : केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू से सहाचार्य ज्योतिष विभाग से सेवानिवृत।

सम्मान : महामहिम राज्यपाल महोदय माननीय, लोकसभा सदस्यों तथा गणमान्य जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में अभूतपूर्व योगदान हेतु सम्मानित, सनातन धर्म पथ परिषद् केन्द्र, पठानकोट के सौजन्य से 'लाइफटाईम अचीवमेंट अवार्ड–2024', केन्द्रिय ब्राह्मण सभा, पठानकोट से 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2024', NAKSHATRA 27 RESEARCH CENTRE FOR ASTROLOGICAL SCIENCES UNIVERSITY (TRUST) ISO9001-2015 Certified से 'ज्योतिषीय पद्मविभूषण अवार्ड 2024', SHREEPATI ASTROVAASTU CONSULTACNY (Regd.) Internatiobnal Astrology and Vaastu Conference SMVD University, Katra (J&K), Life Time Achievement Award, 2023, Cosmic Healer Star Award-2022, भगवान परशुराम राष्ट्रिय पण्डित परिषद् ट्रस्ट, जयपुर 'अपराकाशी ज्योतिषरत्न सम्मान'।

सम्पादन : विभिन्न समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं में संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में आलेख प्रकाशित।

प्रकाशन : 'धर्म भास्कर' कैलेण्डर, श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्, शास्त्रसौरभम् में सम्पादक एवं वृद्ध वसिष्ठसंहिता भाग 1–2 (सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक), श्री बाबा अमरनाथ वर्फानी जी की पूजा पद्धति (सम्पादक एवं संकलनकर्ता) 'कश्यपसंहिता' हिन्दी रूपान्तर सहित प्रकाशित, प्रकाशक चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी (उ.प्र.)

समाजसेवा : डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, चाणक्य चौक परेड एवं बावा कैलखदेव प्रबन्धक कमेटी जम्मू में सक्रिय भूमिका तथा **श्री अमरनाथ जी श्राइन बोर्ड के भूतपूर्व सदस्य, सनातन धर्म पथ परिषद् प्रधान (जम्मू–कश्मीर), श्रीशिवखोड़ी श्राइन बोर्ड के सदस्य**

संचालक श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान (पञ्जीकृत), जम्मू

सम्पर्क सूत्र : 09419194230, 6005569931

ई मेल : drcmraina@gmail-com

www.drcmraina.com